479

❀ ॐ ❀

❀ अथ वृषभान विनोद ❀

श्री सीतानाथ शरण मनमोहन

श्रीमद् सवाई महेन्द्र महाराज सर "प्रताप सिंह" बहादुर जू देव की धर्मपत्नी श्री सवाई महेन्द्र महारानी श्रीमती रानी "वृषभानकुँवर" जू ने स्वमति अनुसार परम मनोहर पद ललित छंद प्रबन्ध में सरस और भावपूर्ण ग्रंथ निर्मित किया।

श्री कनक भवन, अयोध्या।

❀ ॐ ❀

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

६१०

❀ अथ वृषभानविनोद ❀

श्रीमन्महाराजाधिराज सर्वगुणसम्पन्न कुलभूषण बुंदेलवंशोद्भव श्रीकृष्ण-चंद्र कृपापात्राधिकारी श्रीमद्सवाई महेंन्द्र महाराज सर **"प्रताप सिंह"** बहादुर जू देव सरामदराजहाय बुंदेलखंड जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. औड़छानरेश की धर्मपत्नी श्रीसवाई महेंन्द्र महारानी श्रीमती देवी **"वृषभानकुँवर"** जू श्रीमद्रामचंद्र कृपापात्राधिकारिणी ने स्वमति अनुसार परममनोहर पद ललितछंद प्रबन्ध में सरस और भावपूर्ण यह ग्रंथ निर्मित किया

जिसकी प्रथमावृत्ति

श्रीमान्य महाराजाधिराज सकल ऐश्वर्य संपन्न बुंदेलावंशावतंस श्रीमहाराजा श्रीसवाई महाराजा सर **"सावंतसिंह"** बहादुर जू देव के. सी. आई. ई. बिजावर नरेश की धर्मपत्नी समस्त हरिजन हितकारिणी श्रीमती देवी सवाई महाराणी **'रत्नकुँवरि'** जू की आज्ञानुसार दीवान बहादुर साहब **'शिवराजसिंह"** जू देव ने कराई थी।

एवं जिसकी द्वितीयावृत्ति

हिज हाईनेस श्री सवाई महाराजा साहब **श्री देवेन्द्र सिंह** जू देव सभापति श्री वृषभान सेतु प्राइवेट ट्रस्ट श्री कनक भवन अयोध्या की स्वीकृति से एवं श्री मेजर **वी० पी० पाण्डेय** सरवराह कार की अनुमति से **पं० हर प्रसाद** मैनेजर कनक भवन अयोध्या द्वारा **श्री फूलचंद जी टीकमाणी** की प्रेरणा से **श्री रामप्रसाद जी राजगढ़िया** ने छपवाई जिसका प्रकाशन-कार्य **बनारसी लाल शास्त्री** एम० ए० (पूर्वार्द्ध) प्राध्यापक टीकमाणी शिक्षा-सदन ने कर, सरला प्रेस वाराणसी में मुद्रित किया।

नम्र निवेदन

कोटानिकोट धन्यवाद उस सच्चिदानंद आनंदकंद परब्रह्म सगुण साकार साकेत विहारी को हैं कि जिनके स्मरणमात्र से ही यह क्षणभंगी मोह भ्रमसंगी शरीर, जन्म संसार के बंधन से मुक्त हो जाता है। जिनही की कृपालवलेशते ऋषि महर्षियों ने नेति-नेति कहकर रामचरित्र वर्णन किये हैं। उनही के आधार पर कलिनर, संतहितकारी समर विजई सर्वगुण संपन्न बुंदेलवंशोद्भव श्रीकृष्णचंद्र कृपापात्र श्रीमानमहाराजाधिराज श्रीसवाई महेंन्द्र महाराजा सर "प्रतापसिंह" बहादुर जू देव सरामद-राजहाय बुंदेलखंड जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. ओडछा नरेश की धर्मपत्नी श्रीमती सवाई मन्हेंद्रमहाराणी 'वृषभानकुँवरि' जू देव्य साकेतवासिनी ने परम मनोहर सुललित छंद प्रबंधों में अवधेश कुमार श्रीरामचंद्रजी व किशोरीजी के जन्मोत्सव की बधाइयां, नगराविलोकन, गारी, (सिद्धक हास्यविलास) बना, होरी, फागे, ठुमरी, गजल आदि सरस और भावपूर्ण वर्णन किया है। उपरोक्त सवाई महेन्द्रमहारानी साहवा की सुपुत्रबधू श्रीमती सवाईमहारानी "रत्नकुँवरि" जू देव्य ने बड़े परिश्रम के साथ संग्रह कराकर रामभक्तों के हितार्थ पुस्तकाकार में प्रकाशित होने की आज्ञा प्रदान की थी, एवं जिसकी पुनरावृत्ति हिज़-हाइनेस श्री सवाई महेन्द्र महाराजा साहब श्री देवेन्द्र सिंह जू देव, सभापति, श्री वृषभान धर्मसेतु प्राइवेट ट्रस्ट श्री कनक भवन अयोध्या की स्वीकृति से श्री राम प्रसाद जी राजगढ़िया ने युगुल सरकार के भक्तों के भजन के लिए कराई।

ऋषि पंचमी भाद्र शु० २०१७

वाराणसी।

निवेदक—

फूलचन्द टीकमाणी

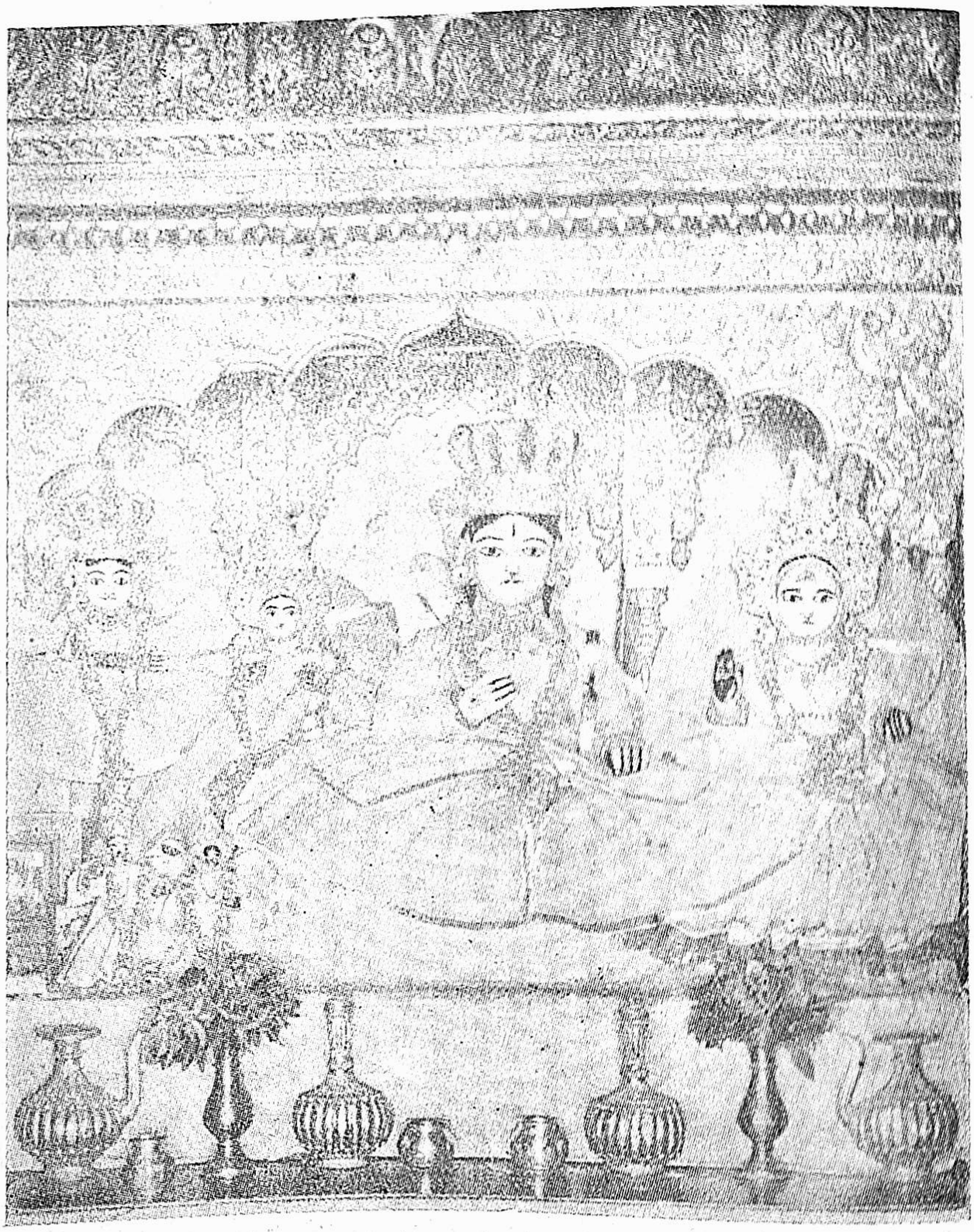

श्री साकेत बिहारी युगुल सरकार

कनक भवन अयोध्या

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

❋ वृषभान बिनोद ❋

वधाई

वधैयां वाजै अनुपम छाजैं ॥ दसरथ भवन भयो सुखभारी मिल चलिये ताकाजैं ॥ विभव समाज अवधको देखत लोकपाल सवलाजैं ॥ श्रीवृषभांनकुंवर वरवनता अंगन रचना साजैं ॥ १ ॥

जगत सुख सोहना फरजंद हुआ ॥ नृप अवधेशके सुत चार जन्में वजें सुर दुंदभी आनंद हुआ ॥ सवें पुरनागरी जुरराजमंदिर लखो दिलवर नयनमोदिलिया ॥ असीसहँ भाँमनो महारानी जू को जियो तव लाल जोरी संग सिया ॥ वरस उत्साह प्यारे ध्यान प्रिया को अलिनजुत गावती श्रीरामप्रिया ॥ २ ॥

श्रवन सुनआई लेन वधाई ॥ जग जाहिर नृप दान देत हैं जो जाके मनभाई ॥ जांचक भये अजांच भूप जिमि रविकुल करत वढ़ाई ॥ वरसगांठ मनहरन लालकी त्रिभुवन को सुख-दाई ॥ रामप्रिया येही वरमांगत चरण कमल सिवकाई ॥ ३ ॥

वाजें वाजें गहरीअवाज सखीरी आज वधाई सोहनो ॥ अरी हारी सखीरी नृपरानी सुत जनमियों भये चार जगत सिर-ताज वधाई मनमोहनी ॥ अरी हारी सखीरी अरथ भँडार लुटा-इयो भूषन पट नानाभाँत अमित गोदोहनी ॥ अरी हारी सखीरी वरसगांठ सुख मोदले श्रीरामप्रिया वलजाइ वसो द्रग कोहनी । ४ ।

ढादिन मचली भूप भवनमें लेतवधाई ना गुमान भरी हैं ॥

बहुत दिनन से रघुकुल जाचत लेहौं मनभाय भरी हैं ॥ नखसिख भूखन मोइ नचईये हीरा रतन भंडार भरी है ॥ तवसुत वदन विलोक चंदसम आय इहां अवलाष करीहैं ॥ दीजे दरश असोस लीजिये रामप्रिया सुखसुजश फरी हैं ॥ ५ ॥

वाजें नगारे घन मदहुलजावें ॥ चल सखिदेखिये भूपभवनमें देव वधूटी मंगल गावें ॥ दामिनसी दमकत चहुदिसतें गांधर्वादि मधुरध्वनि छावैं रामप्रिया आंनदजल वरसत दोष दाग हिरदेके जावें ॥ ६ ॥

सुनआई भूपगृह आज महोत्सवशादिया ॥ अरी हारी सखीरी ॥ वरसगांठ नृपलालकी सुर नर सुनि आनंद काज महोत्सव शादिया ॥ अरी हारी सखीरी देव सुमन झर वरसिया कह सुख उमगो दुख भाज महोत्सव शादिया ॥ अरी हारी सखीरी देव वधूकरें आरती वलिजाई नचें तज लाज महोत्सव शादिया ॥ अरी हारी सखीरी रामप्रिया अभिलाप भर सो वहुविधि मंगल साज महोत्सव शादिया ॥ ७ ॥

वधाई श्रीकिशोरीजीकी

अली निमराजके वधांई हैं ॥ वाजें सुर दुंदभी सुहाई हैं ॥ चली गजगामिनी पुर भामिनी सज उमंग जनु सिंधुको नदी धांई हैं ॥ महलके विच सोहले वहुभांति सोहें नृपतमन जानकी प्रगटाईहैं ॥ सिरानी कूख श्रीमहारानी जूकीअली वृषभान की सुखदाई हैं ॥ ८ ॥

वाजें वाजें घुमड़ घनशादिया ॥ श्रीमिथलाधिप दरवार ॥

रानीसुनेनाकी कूख सिरानो जनकलली जूकीजादिया ॥ राजदु-
लारी सब सुखकारी अवधनगर पावैगादिया ॥ श्रीवृषभानकुंवर
संग खेलहिं चरणकमल अनुरागिया ॥ ९ ॥

नृपत गृहरी आली वजत वधायौ ॥ वजत वधायौ लगत
सुहायौ उमद हियरो आली मंगलगायौ ॥ जो जैसे तैसे उठधाई
हरषवाडौ आली हिये नसमायौ ॥ पोहिची जाइ राजमंदिरमें
मगन मनरी आली आदरपायौ गावहिं नाचहिं भाव दिखावहिं
मधुर सुररि आली रस वरसायौ ॥ जयजयधुन जुवतीगन वोले
ललो मुखारि आली लख सुखपायौ ॥ रामप्रिया प्रिया मातगोद-
दरसलेरी आली भागसरायौ ॥ १० ॥

नृपत घरवाजे विमलवधाई ॥ पुरभामिन जुरचली महलको
मंगलथार सजाई ॥ मधुर मधुर सुरगावै सहेली नाचै भावदिखाई ॥
करहिंआरती देहि निछावर आनद उर नसमाई ॥ महरानी सन-
मान सबनको करकर मानवडाई ॥ रामप्रिया लख मोदभवनको
कमला देख सिहाई ॥ ११ ॥

जनकपुर घरघर अनदवधैयों ॥ चलि गजगामनी जुरपुर-
भामनी थार सजमंगल दुवधरैयो ॥ सकल सनमानी सुनेना-
रानीदियो मन भावतो जोजिहिं चहियो ॥ गावैं सखी साहिले
मृदुवानी सुनत मुनगनके ध्यान छुटैयो ॥ जांचकगुणी भूपग्रह
आयेजांचक भये अजांचकजन्मभरैयो ॥ वृषभांनकुवर येही वर
मागें जुगल चरणनमें चित्तलगैयो ॥ १२ ॥

सुदिनसुमनीको आजकोरी ॥ मधुऋतु शुक्ल नौमि तिथि

जनमी उदयपुण्य निमिराजकोरी ॥ रानीसुनेनाजू वेटीजाई अचल सुख्यसौभाग्यकोरी ॥ रामप्रिया चाहत निसवासर जुगल कंजपद टहलकोरी ॥ १३ ॥

मचलरहि ढाड़िन लेहों बधाई ॥ पट भूषन मोहे नहि चहिये नाही रतन बहुमाई ॥ हाथी घोडा कछु नलेहों रथ नाहीं सुख-दाई ॥ नगर ग्राम चाहों नहिंतुमसो न चहुंराज बडाई ॥ बहुत दिननते जोमन चाहत सोनिध आज दिखाई ॥ देत निछावर लेत न ढाड़िन बहुबिधि करत बड़ाई ॥ निमकुलके पुस्तन को जाचत मनभायो धनपाई ॥ तब तनुजाको बदनचन्द्रसम दीजे बेग-दिखाई ॥ रामप्रिया लखसुख महलनिके सारद कह सकुचाई ।१४।

नृपत ग्रह मंगल अनद बधाई ॥ निमरानी की कूखसिरानी सुखनिध कन्याजाई ॥ पुण्य पयोध उमग भूपतिको शंकर गौर सहाई ॥ नारिनदी बाडी चहुदिसतें सुख्य समुद्र समाई ॥ राम-प्रिया सुर नार लहर जिमि नाचहिं भावदिखाई ॥ १५ ॥

गजल

नृपतिनिमराय कें वाजें बधाये ॥ समय सुभजानके लागेसु हाये ॥ गुनीजनमागनें चहुं दिसतेआये ॥ भूप अहिलादसे भूषन लुटाये ॥ बिप्र सनमानसे बहुदान पाये ॥ कहैं जयजीव यश त्रैलोक छाये ॥ सीय शशिवदन लख मनसा पुजाये ॥ रामप्रिया सहचरी नैंना जुडाये ॥ १६ ॥

नृपग्रह सिया अवतारारी सबजग उजयारा ॥ श्रीनिमराज मोद मनहरसत बगसत रतन भँडारा ॥ अति आनंन्द जनकपुर

वासिन घरघर मंगलचारा ॥ रामप्रिया सिया जन्म लियौ है सजनी भागहमारा ॥ १७ ।

वधाई ॥ श्रीनिमराज दुलारी जोवें जुग मैयाकी लेंव बलाय ॥ होंढाठी आयो जांचनको नाचन अन्त न जाय ॥ दीजे दान अशीसलीलिये कीजे मोमनभाय ॥ रामप्रिया नितदरस ललीके नैंनन तरस बुझाय ॥ १८ ॥

मनहरन बधाई बाजें ॥ भूपभवन सुख साजें ॥ सरस राग बाजे सुहनाई नौवद घनमदलाजे ॥ सुवरन सींक समार सातिया नृप दरवाजे भ्राजे ॥ तोरन धुजाबँधे चहुँओरन रतन लुटत जनु लाजें ॥ मांगधबंदीजन बहुनिधिलैमनभावत छबिछाजै ॥ बरसगांठ मनहरन लालकी भक्तिजनन सुखकाजे ॥ रामप्रिया तनमन धन वारत नितनव मंगलराजे ॥ १९ ॥

॥ नगर अवलोकनके पद ॥ लखोरी आलो मैंने राम-सलोना ॥ आये सुमनलेंन फुलवारी नृप दसरथजूके छोना ॥ सुन्दर बदन मदनतन वारत कोउ ना सखो जगहोना ॥ अति-कोमल सुकुमार अलीरो लिए सुमन कर दोंना ॥ सिरन चौतनी सुभग सुहाई जुलफनबिच उरझौना ॥ लतन ओटतै सखिन लखायो मानो विधिजुगयोना ॥ येही धनुषटोरहैं आली येही सिया पिया होना ॥ बृषभानकुँवरि मन येही लालसा करहैं सिय-सँगगोना ॥ २० ॥

सियापिया देखे लखन फुलबगिया ॥ सिरन चौतनी सुभग सुहाई सुन्दर स्याम राम धनधरिया ॥ नखसिख सुभग मनोहर

जोरी कोटन मदनमान मदमथिया ॥ दुरजोगऐ जब दृष्टि न आए सिया मनविकल भई सबसखियाँ ॥ गौर निकेत विनयकर माँगत वरस्यामल सुन्दर मनबसिया ॥ वृषभानकुँवर गिरजा प्रसादले आनद उमग उमग उरभरिया ॥ २१ ॥

येसी छबिमाधुरी देखी कभींना ॥ किसी महाराजके नकशे नगीना ॥ लखेथे चिमनमें झाडों के नीचे लिए सुभदल जुत सुमनों के दोंना । सुनत सब सखी उत्कंठा हुई है चलो चल देखिये दिलके ठगौना ॥ पिया मुखचन्द रस पीनेकी आसा अलीवृषभानके चकवई हैं नेंना ॥ २२ ॥

गाधिसुवनसँग आयेजेदोउ राम लखन मन ॥ समाचार मिथिलापति पाये लिये साथ सब विप्र सचिवगन ॥ कर प्रनाम भूपति हिये लाये देख राम भये भूप सिथलतन ॥ कहुमुन कैजे भव भयटारन है सुईवसेसदां जेशिवमन ॥ नृपकुलतिलकके मुनन-कुलपालक देखमोहमन भयो स्यामघन ॥ जे नृप दसरथके दोउ ठोटा श्रीवृषभानकुवर जीवन धन ॥ २३ ॥

जे दोउ मुनमखके रखवारे ॥ नगर विलोकन आये सजनी श्यामवरन कोसिन्याजूके वारे ॥ गोर किशोर सुमित्राकेसुत ललित रूप लोचन रतनारे ॥ सखी इन समकोउ वीर न सुनियत हनीताडका असुर इनमारे ॥ सखी जे नृप पूरनकरहै तोर धनुप सिया व्याह सिधारे ॥ वडप्रभाव लघु गनिअत नाहीं गौतम त्रिया तार पगधारे । जो विधबस संयोग समारौ हमनीके निज नयन निहारे ॥ अली वृषभानु भरोखन लागी लगे नाडीठ तोर तृन डारे ॥ २४ ॥

जे दोउ नगर विलोकन आयेरी ॥ बिश्वामित्र संग नृप ढोटा शोभा निरख मनोज लजायेरी ॥ सिरन चोतनी सुभग सुहाये श्यामल गौर किशोर सहायेरी ॥ कोशिल्या सुत राम कहावत लखन सुमित्राके मनभायेरी ॥ अली वृषभान धनुष जे तोरें ले जयमाल सिया पहरायेरी ॥ २५ ॥

ये सुन्दरवर सुमुख सुनोरी ॥ शिवको धनुष कठिन सुन आली जैसो कठिन मनभपठयोरी ॥ जो नृप जात पिनाक न दी सत वीर पराक्रम हार दयोरी ॥ इनहिं छाँड कोउ धनुष न तोरे येही ब्रह्मावर जोग रचोरी ॥ श्रीवृषभानुकुँवर मनभावन मोह सगुन सखी नीक भयोरी ॥ २६ ।

जनकपुर आये श्रीरघुराई ॥ लेउ नयन को लाभ सखीरी अस कह सब उठधाई । अर्घ पावडे करत सुनेना आनद उरन समाई ॥ श्यामलगात सरसीरुह लोचन कोट अनंग लजाई ॥ गई लिवाइ जनक मन्दिरमें लखन भरत रघुराई ॥ सेवा भोग लगाइ विविधि विधि सीतल जल भरलाई ॥ वृषभान अली अद-भुत छविको कवि निरख निरख वलजाई ॥ २७ ॥

कर कमलन प्रभु धनुष उठायो ॥ छूतन नभमंडल सम-भयेउ पुनदामिन दुतछायो ॥ जय जय गान भई मंगल धन देव सुमन वरसायो ॥ गुरु सिरनाय बैठ निज आसन विजय निसान वजायो ॥ सिय जयमाल राम पहराई जुवतिन मंगल गायो ॥ वृषभानकुँवर लखजुगल माधुरी ॥ अवध छेल चित चायो ॥२८॥

देखो माई जनक सुतापति नागर ॥ प्रभु मनसा लवलीन

वाजि छविकोट कला गुन आगर ॥ सारे लक्ष्मीनिधिसंग सोहत अनुज सखा गुनआगर ॥ राजत राम जनक दरवाजें सुन्दररूप उजागर ॥ वृषभानकुँवर सियके संग जेहैं मिथला नगर तज वा घर ॥ २९ ॥

॥ वना ॥ वाँकी चलन हँसन वनरेकी । माथे मौर खौर चन्दनको फुँदरी हलन लटक जुलफन की ॥ व्याह विभूषन सोहत सुन्दर राजकुँवर छविदलन मदनकी ॥ अली वृषभानकुँवर मनभावन जुगजीवे जोरी सियावरकी ॥ ३० ॥

क्यावनरा मजेदार सलोना ॥ तुरंग नचावत वदनदिखावत चितवनमें पड़डारत टोना ॥ लाजह कोट काम इन ऊपर वार दीजिये तनमन सोना ॥ अली वृषभानकुँवर मनभावन रघवंशी मेरो यार सलोना ॥ ३१ ॥

मेरे मनभाये दोउ राजकुँवर पाउने ॥ श्यामल गोर किशोर मनोहर कोटन काम लाजउने ॥ मिथलापुर नर नार सवनके वरवस चित चराउने ॥ कोट रवीसम तेज प्रकाशत सबके भाग जगाउने ॥ नृपप्रण पूरन कर सबही विधि भूपन गर्भ घटाउने । वृषभान अली सियके वनरैं को ममहिय माँझ बसावने ॥ ३२ ॥

रघुराज वन वनआवेरी नवल किशोर लालदसरथको सबहीके मनभावेरी ॥ अनव्याही सब व्याही व्याही सबको चित चुरावेरी ॥ वृषभानकुँवर ऐसो सुन्दर वर सो हियमांझ वसावेरी ॥ ३३ ॥

वनाजी तेरी अँखिया लागनी हो ॥ अरुन कंजकारे रतिनारे मदन वानके घालनीहो ॥ सुनियौ नृपत किशोर सियावर

रूप पयूष पिआवनी हो ॥ अली वृषभानकुँवर मोहा मन नेक न पल विसरावनी हो ॥ ३४ ॥

बनामेरा अजब सलोना राजकुँवर चितचोर ॥ रतनारी अँखियनेमें कजरा हँसहेरे मेरी ओर ॥ सिरपर मौर जुलफ घघँरारी है चन्दनकी खौर ॥ व्याह विभूषन सोहत अंग अंग नृप सुतराज किशोर ॥ वृषभानकुँवर लख माधुरी मूरत अवजिय लगत न मोर ॥ ३५ ॥

हो राजबनरे गजव तेरा सेहरा ॥ जबसे लखोबना नेक नजर भर तबसे लगा मेरा नेहरा ॥ ठगीसी रही कछू कह न सकत हों विसरगई सुध गेहरा ॥ वृषभानकुँवर छविदेख मगनभई वारो तन मन देहरा ॥ ३६ ॥

सियावर बनरा आली सलोना ॥ माथे मौर खौर चन्दनकी टिवकी लाल ललिक मनलोना ॥ कजरारे रतनारे लोचन तिर्छी नजरलगें मानो टोना ॥ स्वामिनि जनकनंदनी के संग अली वृषभानकुँवर को गोना ॥ ३७ ॥

हो राजबनरे लगा तुमसे नेहरा ॥ जबसे लखी माधुरीमूरत नहिं सुहात पितु गेहरा ॥ होन न देउंगो ओट पलक छिन करों गरे को गजरा ॥ लोक लाज कुलकान बिहाई चलहों तुमारे सातरा ॥ वृषभानकुँवरकी येही बिनती बरसावहु रस मेहरा । ३८ ।

गजल

रघुवंश राजबनरा गजपर सवार आता ॥ जनु नीलधर सुमेर सिखिर भानु उआ आता ॥ मिथलेश नगर नारी नर मोदको

बडाता ॥ रनिवास सिंधु अलियन द्रग कंजको फुलाता ॥ रतनोंके बंगलेमें रसमाधुरी दिखाता ॥ झुकते जुहार लेते छवि अमीको पिलाता ॥ हँस अनुजतन बिलोके सखी बचन को सुनाता ॥ त्रैलोक बसीकरन मोर चित्तको चुराता ॥ अब तो हृदय विचारी करहों इन्हींसों यारी ॥ बृषभानकुँवर स्वामिनी सिया नेहको निवाता ॥ ३९ ॥

बना

चलो सखी देखिये बनरा छबीला ॥ हँसहेरके चित चोरत ऐसा ठगीला ॥ सुरँग मंडील सिरबाँधे अजबका, लसें सिरपेंचपे कलगी झुकीला ॥ कंजद्रग नयनखंजनको लजाता ॥ विलोकन नागरी दिलको फसीला ॥ दसन दुत चन्द्र किरनोंकी प्रभासा, मंद मुसक्यान वारों लख सवीला ॥ अली बृषभान कहें दिलवर के ऊपर ॥ भई कुरवान लख प्यारी नवीला ॥ ४० ॥

गारी ॥ कुल दीपक राजकिशोर सदन सरहजके गये ॥ रस मंगल मोद अपार सगुन शुभहोत नये । नव कंचन कलस समार पांवडे अरघदये ॥ रघुवरके चरण पखार सिद्ध करजोर कये ॥ सिंहासन चारु मगाय सुभग आसन सुदये ॥ नवछावर भूषन बसन तिलक केशरके भये ॥ पुन चरणकमल धरसीस बिनय बहुभाँति करी ॥ ननदेऊ रूप निहार सिद्ध आनंद भरी ॥ सिर मंजु मनोहर मौर कोट रवितेज लजे ॥ फुंदरी है रतन जराव अधिक शोभा जो सजे ॥ मकराकृत कुंडल कान लरें मुक्ताझलकें ॥ झुकनासा हलन बुलाक चितें सब मनललकें ॥ भुजबाजू जोसन

बीच सुभग सेला जुलसें ॥ कर कंचन पोंची रतन जटित चूरा जुकसे ॥ गलगोप पदिक मनमाल हार मोतिनके सजें ॥ कटकिं-किनी परम सुदेस मधुर सुर अधिक बजे ॥ पग नूपुर सुखमासीम चरण जावकसे भरे ॥ लख मोजा अधिक अनूप लाल कोरनमें जरे ॥ अँग जामा लाल सुरंग कमर पटका जुकसे ॥ बँधी दोउ कूल बिसाल बीच पनरथ सिरजे ॥ जाकी जगमग जोति निहार कोट दामिन लरजें ॥ सब वैस किशोर सुदेस देख कामिन ललकें ॥ रंगभीनें रसिक चित चोर निरख थाकी पलकें ॥ हस हेर ठगी नृपनार मंत्र जादू सो कियें ॥ इन लोचन बीच बसाव रूप रस सिंधु पियें ॥ पकवान अनेक प्रकार थार सोनेके भरे ॥ कर कमल लिये वरनार ललकि प्रभु आगे धरे ॥ कमला जल अधिक पुनीत सुभग झारी सुभरी ॥ भोजन करिये महाराज सिद्ध करबीजन धरा ॥ जेवन लागे नृपलाल मधुर रसि बात कही ॥ तुम बाप सुनत बहुजात बात मिथ्याके सही ॥ पितु बहुत बखानत जगत अग्नि नृप शृंग मुनी ॥ जननी हैं तुमरी तीन दया निधि अधिक सुनी ॥ बड़ी जननी दान क्रत शूर देहतन अधिक धनी ॥ मजली जननीकी बात लाल बहुभांति मनी ॥ जिन मधुरे वचन बखान ठगे तपराज मुनी ॥ लघुमात सकल गुन खान रूप बहुवेसवनी ॥ सब मात मदनकी पोर विकल बहुभांति घनी ॥ तिन को इहि देश पठाय रमें मिथलेशधनी ॥ सांता बहिनी नव वैसदेख ऋष शृंगभगे ॥ निमराज कुंवरकौ देख सुजस भुय माहजगे ॥ रघुनंदन आनद कंद चंद मुखदेख लजे ॥

सब अवधपुरीकी लली गलिन पति भाव भजे ॥ भुय भूषन भरत रसाल लाल कुल सुजस सनी ॥ संतान करन दमवंत रमी संग बसिष्ठ मुनी ॥ तुमें साद बखानत जगत भक्तरेखा पूरी ॥ मुख मोर हँसत चित चोर पडे जादू मूरी ॥ तुम लाख गुनन के भरे लखन नृपलाल सुनो ॥ जब लाखन पितुको अंस लखन तुम नाम गुनो ॥ तुय एक पिताके लाल दुरँग रँग कैसे भये ॥ नृप चतुर चोथपन जान मुननसे मांगलये ॥ रिपुसूदन भूषन जगत सूर गिनतोमें बडे बहनेउकरे दुजसिंह सीस तिन सींग गडे रघु-वंशिनको यश अमित नमित हम कहावरनें ॥ मुख छोट बात बहु मोट शरम जगकी भरने ॥ रघवंशीकुँवर अनेक बात रघुकुलको सची । नव नागर भेषवनाय जाय भृगुपतिसे बची ॥ तुम पुज्य हमारे बडे खोज अवका करने ॥ सनवंध बडो बलवान सदा तुमसे नवने ॥ रूखजान आन जल कलश मुदित अचवन कीनें ॥ रूमाल करन मुखपोंछ हसत रसरँग भीनें ॥ रुचि बीरा अतर मंगाय विहस सरहजनेंदये ॥ अति मुदित भयो रनवास हाँस आनद लये ॥ हँसि सिद्ध कुँवर मुखमोर लालकर कंज गये ॥ नृपनंदन प्राण अधार जगत सुखदेन भये ॥ बिन दरशन कल जियनाह कहो हम केसे रहैं ॥ दिन दूनी बिरह की पीर लाल हम केसे सहैं ॥ प्यारे नेह बिसरि जिनजाउ मात गृह जाओ भले ॥ ननदेउ जीवन प्राण प्रीतकर आप चले ॥ वरदीजे लाल सुजान चरण हिय माह वसें ॥ नित दुलहा रूप अनूप व्याह उतसाह रसे ॥ कहि चरण गहे अकुलाइ गिरापद कमल भरी ॥

यह नातो नेह निवाह बहुर कब दरश करो ॥ सुन सरहज बिरहके वेंन लाल अंग शिथिल भय ॥ नहि व्याकुल होवो सुजान सदां तुम पास रहें ॥ अस सुन रघुवरके बैंन चेंन मन अधिक भये ॥ बहु मिलन दरश की आश प्रगट भये नेह नये ॥ पुनः भरत चरण धरशीस बिनय बहुभांति करी ॥ कब मिल हैं राजकिशोर अधिक रसनेह भरी ॥ तब लखनलालके चरण धरन गह शीस रई ॥ भई विरह विथा भरपूर शिथल सब अंग भई ॥ रस खान सत्रुहन जान कमल पदगह सुकही ॥ सब भ्राता नेह निबायो बहुरपुर आयो सही ॥ बहुबार धरन धरशीस कमलकर जोर खडी ॥ रघुनंदन दीनदयाल कृपा अति कीन बडी ॥ रससिंधु राम सुख कंद पान सरहजके गहो ॥ समझाई राजकुमार प्रेमजल नेन रहो ॥ विनदेखे भामिन तुमहि कठिन निसिदिन बीते ॥ मिल बिछुरनको बहुपीर मीत अपने जीते ॥ बरमानौ आज सुदेउं विकल जिन होउ घनो ॥ तुम सदन अमृत सुख लये प्राण से अधिक मनी ॥ रघुवीर सबनकर बोध सदन सासोके गये ॥ लख सास चन्द्र मुख हरष बडे आनंद लये ॥ अब विदा होनेके काज भूप पठये हमको ॥ जो दीजे आयुश मात तो जाउं अवध-पुरको ॥ अस सुन महारानी वेंन सियाजू बोललई ॥ वृषभानअली दई संग सिया मन मुदित भई ॥ ४२ ॥

श्रीवृषभानकुँपर क्रत बंदन पोंचै बाबूजी ॥ हमरे पद सब बनये लालजी अपनी बहिन सिखावो जी ॥ वेनाचें तुम तान समारो तुमरे दाउ ताल बजावेंजी ॥ जब सांता ताथेई थेई कह

नाचें तब तुम लेहु बलाई जी ॥ अपने कुलकी रीति न छाडो निजकरनाम चलाये जी ॥ ऋषि संग हूहैं तपसी कहाहैं कुछ शोभा नहि पाओ जी ॥ जो अपनों यशसुनों लाल जी मनमानों सुख पाओ जी ॥ कृपाकरो बाबूजी हमपर सांता लक्ष्मीनिधि दीजे जी । जो कछू चूक परी होय हमसे सोसुधार तुम लीजे जी । अब कछू सोचकरो जिन लालन एकवंन दो जीजाजी ॥ तुम जो कहत भोजन नहि भावत गारी बिलख न कीजेजी ॥ प्रभू प्रीतिकी रीति छबीली राखो हियमें गोईजो ॥ सिय सहचरि को अर्ज मानिये प्रिये रहै बडाई जी ॥ ४३ ॥

सांता बिहिन तुमारी लालजी रघुनंदनकी नारी जू ॥ तुमसे बची ऋषिनने पाई ऋषि नारी वे कहांईजू ॥ तुमरी बहनो सौत हमारी एक बड़ी यह हांसी जू ॥ हम मांगीतो अपने बिरनको तुम अपने ग्रह राखो जू ॥ हम जानतते बातें झूंठो अब हम सांची पाई जू ॥ जो जैसो होय सुनहु लालजी सो तैसी सब माने जू ॥ तुमरे कुल बिवहार अनोखो राजन ऋषिन बिहाईजू । हमरे कुल असरीत लालजी राजन राज सगाईजू ॥ अलीबृषभान-कुँवर क्रत बंदन सदा चरण सिवकाई जू ॥ ४४ ॥

एक गारी सुनो महाराज तो रसिभरी गावत हैं हम सुनी महामहिपाल सो ऋषि बुलवावत हैं ॥ महलनमें देत निवास ससुत उपजावत हैं ॥ महारानी बडो रसिखान सो अधिक रमावत हैं ॥ जो जांचत हैं मुनराज सुमनसा पुजावत हैं ॥ बहिनो है गुनआगार सो सब बोरावत हैं ॥ तुम चारों राजकुमार ललक

गर लावत हैं ॥ नवजोवन रुप सुवैस अदा दिखलावत है ॥ जाको नववैस निहार सो कोक पढावतहैं ॥ यह जान सकल भोपाल न कोउ अपनावति हैं जब जानी अवधनरेश सो कुलहिं लजावति हैं ॥ भोरे ऋष लये बुलाय सो व्याहु करावतिहैं ॥ नहिं नार पुरुषको ज्ञान सो रसिक कहावति हैं ॥ तासें मन रहत उदास न कोउ लखपावति हैं ॥ दुख हरन सकल सुख दैन सु तुमें जनावति हैं ॥ उन के हिय मदनकी परि सो कैसे बुझावति-हैं ॥ हमरे निमराज कुमारही मनमें चाहतहैं ॥ महारानि सिद्ध-कुमारी सुमृद्ध मुसक्यावति हैं ॥ सुनिये नृप राजकोमार हमें मन भावत है ॥ एवज हमरेके काज सु तुमसे चाहत हैं यह रहसहांस अति गुप्त न कोविद जानतहैं ॥ बृषभान अली श्री कृपा नकोउ जन जानतहैं ॥ ४५ ॥

तुमसे पूंछत एकवात लाल सकुचावत हैं ॥ प्यारे पितु करतूत को साख सो सब जग जानतहै ॥ हम कहत वडनकी बात अधिक शरमावतहैं ॥ मइया तुमारी रसिखान सो कोविद गावतहैं ॥ अति कामकलामें प्रवीण केल मनभावतहैं ॥ पितु निवल जान मनमाहि वहुत दुख पावतहैं ॥ वलवान पुरुष को खोज वहुत करवावतहैं ॥ ऋषराज वडे तपसाल वहुत मन भावतहैं ॥ मुन माधिके आशिरवाद से सुत उपजावतहैं ॥ अव-सांचकहो नृपलाल कवनपितु मानतहैं ॥ इक भारी अचंभेकी वात सुनो समुझावतहैं ॥ पितु तीन सुनें सुत चार सो कीके कहावतहैं ॥ महाराजही के गुणरूप आपमें आवतहैं ॥ ऋषधर्म

ज्ञानगुण शील भरत अनुमानतहैं ॥ वहुतेज अग्नि से प्रगट लषन अनुमानतहैं ॥ रिपुसूदनलाल के तात सो काके वषानतहैं ॥ निमराज शील गुणवान इन्हें पितु भावतहैं ॥ इनके पितु हैं मिथलेश सो सव सुखपावतहैं ॥ नृपलाल आप रसराज वडे हमजानतहैं ॥ नवकोकसार की कला भली विधिजानतहैं ॥ आसन चौसटकीगुरू नारि ऋषि जानतिहैं ॥ वेकामकला में प्रवीण श्रीसांता कहावतिहैं ॥ तुमरी वहिनी की चाह नृपतिसुत राखतहैं ॥ अवदीजे लाल पठाय सो वड अवलाषतहैं ॥ इम सुन सिद्धीजू के वैन कुँवर मन मुदित भये ॥ प्यारी हम तुमरेग्रह आय सोरसिसुख अमित लये ॥ यह हांसविलासहि सदा जासु मन चाहतहैं ॥ सो जानी हो सियाजू की कृपा महल सुखपावतहैं ॥ भनत अली वृषभांन जुगल यश गावतिहैं ॥ निज खास महलकी टहल चरण गह मागतहैं ॥ ४६ ॥

वनाजीकैसे नगर जनकपुर आये । कौसिल्याजी मातुन ल्याये वनाजो । पितु करतूत की साख लालजी खीर खाय सुत जाये । निज भगनी तपसन को दीनी सुयश तिहूँपुर छाये । लक्ष्मीनिधको वहिन दीजिये सुखपावहु मनभाये । कुलके जोग काज नहिं कीनो नाहक दोष लगाये । नागर अली अवध की सवरी निजपति नहिं मनभाये । देउ पठाय जनक जू की नगरी पूरन काम सुहाये । विंग वचन सुन राजकुँवर सव ताकत मृदु मुसक्याये । हासविलास महल में माचौ कहत कौन परगाये । देखत वनत कहो किम सजनी अद्भुतसख सरगाये । श्रीवृषभान कुँवर परपूरण नितनव होत वधाये ॥ ४७ ॥

रघुवंशी राज कुंमार हमारी इक गारी सुनो। तुमारी वहनी के गुण अमित कहत हम हृदय गुनो। वाके नैना आम कैसी फांक विकट कजरारेहैं। हँस हेरन चितकेचोर मदन मतवारेहैं। वांके नव जोवन अनुरूप बिल्व फल भारेहैं। जरकस कंचुकी के वीचगैद जुग धारेहैं। वांकी त्रिवली रेखा उदर नाभ मनहारीहै। जुग जंघा कदलि समान चालगज न्यारीहैं। सज विश्वा कैसो सा पुरष मगजोय रही। नहिं पायो कोउ वलवान समझ चित सोच रही। नवजोवन लक्षन लाल देखि पंलग पर आय गई। जियजानी कुलटानार गरेसे लाइ लई॥ ४८॥

❀ अथ फुटकर पद ❀

छुयो न मोरी वैयाहो प्रीतमप्यारे थोरे दिननकी वाल। जोतुम लाल करो वरजोरी सैयापरो तोरी पैया। हेरन में मेरो जिय डरपे केसे आऊं सिजरिया। हावभाव नहिं मोह सुहावत वरकत मेरी छतियां। अलीवृषभानकुँवर लख भोरी नहिं जानी छल वतिया॥ ४९॥

॥ होरी ॥ वांको छेल खडो मग संग अनुज। मिल सखन गवावति गारी वक वक। जिहि डरसे निकसी नहिं घरसे मेरी गई ये लाज गुरजन की सक सक। अति जिय भोरी नवल किशोरी होन लगी छतियाँ धक धक। नागर निकट आय कर पकरत घूंघट खोलत हैं झुक झुक। वडखिलवार लाल होरीको मैं जो रहत जीमें जक जक। करहो उपाय चलो न सिमिट अव जाऊ चतुरईसे इक इक। श्रीवृषभानकुँवर पिया पकरे देखत सव रहिगई जक जक॥ ५०॥

देखो मोरीरोकत है पनघटकी गैल रघुराज लाल मतवारो छैल । होंसरजू जाल भरन जातती अनुजा सखा लिये करत फैल । तनक न कान करत गुरजन की अंक भरत भुजा कंठ मेल । लाज भरी कछू कहनसकत हों हाहा करत पिया भयोहै झेल । वृषभान-कुँवर की स्वामिन सियाजू इन वातन पिय दईहै मेल ॥ ५१ ॥

छैल द्रग मूठ गुलाल न डारो । तेरी वारवार वलिहारों । कसकत हैं लो इन कोइनमें नेक तो कसक विचारौ खिलारी । मानो विनय जरा राखो मिहिर । रामप्रिया पिया होरी खेलन में अनरस करौ ना अवधविहारी आज समारौ रस की लहर । ५२ ।

रसिया अवधविहारी हमारी चूनर रँगडारी । बहुतक करी विनय हम तुमसों हाहा कर पचहारी । हटकत मोरी वैया मरोरी सिर गगरी फोडारी ॥ हसत कर देदेतारी । दरक गई मुकतावलि सिगरी लाल भई जरतारी । वैसई लोग चवाव करतहैं देखत देहैं गारी ॥ करी नाहक तुमख्वारी । मग रोकत नित करत ढिटोली कीनो कौन गुनारी । वृषभानकुँवर के आवधश्यामरे टोरत लाज हमारी । प्रीतिकी रीति न्यारी ॥५३॥

मुहसे करत वरजोरी छैल नवनागररे । झपट आय घूँघट पट खोलत आन मलत मुखरोरीरे । हो हो कह होरी मुख गावत पकर नचावत गोरीरे । रामप्रिया लख जुगल माधुरी या होरी पर वारीरे ॥ ५४ ॥

भयौ अनौखौ छैल खिलारी हमारी लाल चूनर रंगडारी । विनय न मानत रँगमें भिजोवत येसौ निपट अनारी । मलत

गुलाल कपोलन सजनी याहोरीतै हारी। घूंघट खोल करत रस-घतिया पुन बोलत मुख गारी। रायप्रिया लालन मदमाती नितहि मचावत रारी। ५५।

येसी होरी कोउ खेलतखेल खिलारीरे। तुम तो राजकुँवर गरभीले है तुमारी गति न्यारीरे। सहज हमें तुम कपटचतुर गति रोकत वाट हमारीरे। करपायो होरी को अवर वची न एकहि नारीरे। कौशलेश अवधेश पिया वृषभांनकुँवर हितकारीरे। ५६।

आली सनमुख पिचक चलावे अवध पिया दरशन को तर-सावे। जुलफ अतर अनुराग चुवत जनु सीस ताज मनभावे। ललित कपोल गुलाल छीटपट केशर कुसुम सुहावे। रंग आकर उर माझ घालि तकि करकटाच्च मुसक्यावे। चोली रंग भिजादे-ताली बहुर गुलाल उडावे। वृषभानकुँवर फगुआ की अवसर न सुख कछू कहआवे ॥ ५७ ॥

पिया खेलों मैं तेरे संग होरी। अहो होरी होरी वरजोरी। होरी को दिन भागते पायौ खेलकरों भर पूरी। सखान सहित केसर में वोरों धूम मचाउं करजोरी। अलीवृषभानकुँवर पिया रसिक सिरोमनि आज बनाउं तुमें गोरो। ५८।

रघुवंशनमें वोरआज तुमें होरी खिलाउरे। सिर चुनरी चोली देवेंदी कट लँहगा पहराउरे। भुजवाजू चूरी कर पोंची जुवतिन भाव सिखाउंरे। पग पाइल विछिया देजावक छम छम नाच नचाउरे। नारि सिंगार वहुत अदभुत कर अनुजन मन ललकाऊंरे। इतनों जोनकरों मन भावन सिया सहचरी न कहा-ऊंरे। अलीवृषभानकुँवर कहि पियसो विजेकोपत्र लिखाऊंरे।५९।

तुम को आज होरी खिलाऊं। आज तुमे धरके रघुनंदन मुखभर रंग लगाऊं। छीनलेहुँ करते पिचकारी तव सिय सखी कहाऊं। लैजै हों मिथलेश लली ढिग सखी कर पाय पराऊं चूक सव माफ कराऊं। वृषभानकुँवर हम लखन कहत है सव सखियन धरलाऊं भली विधि नाच नचाऊं। छीनलेहु सवके पट भूषन रंगनमें अनुवाऊं आज सियवर सिखपाऊं। ६०।

नहिं खेलिये राजकुमार अनोखी होरी लला। छलवलकर जुवतिन ढिग आवत मेरेमुखसे मलत गुलाल करीमनभाई लला। झगर झगरके पिचक चलावत गलटूटी मोतिनकीमाल अनोखी होरी लला। आपनखेलत अनुजस सिरझावत अजव मचावत ख्याल नहिं खेलिये राजकुमार अनोखी होरी लला। अलीवृषभानकुँवर रसनागर चितवन करत निहाल अनोखी होरी लला।६१।

सजौ किन नवनव भूषन अंग। रघुवंशीसुकुमार छवीले प्रान प्रियाकेसंग। आयें सुन खेलन होरी ढप वजत वीन मुहचंग हँस कहि प्रान वल्लभा सजनी लियो साज सजिरंग। चली तडित दुत मथन कलेवर वोरी मनहु अनंग। केल कंज आगे वितान तर मिल ललना इकसंग। घालत उते नवल छेलनपर मूठ गुलाल उमंग। वृषभानकुँवरनें झपट पकर लियो सानी पिया निजरंग।६२।

चुवन लागौ चोलिन चुनरी रंग। छाई कुमकुम कलित कपोल लटवेसर इकसंग। परसन भाल चंद्रकन कवरी लपटानी नवअंग। अवलोकत मुसक्यात प्रानपति घालत मूठ दुचंग। अनयारे द्रग तीर लाडले घूंघट खोल निखंग। मोहौं पिये विहवल रसवस कर पिचकारी गति भंग। होहो कह मिलगह युवतिनमुख

द्रग अंजन दियो उमंग। वृषभानकुँवर केसहिके हारे तुम स्वामिनि सँग अंग। ६३।

होरी खेलत प्यारी रसरंग भरी। उते पिया संग सखा नवनागर इते सिया संग नवगोरी। सनमुख पिचक चलावत नागर अलि समाज सब लाल करी। केशर रंग वरसत चहुँदिशतें लखि नहिं परत कौन गोरी। वृभभानकुँवर कह चतुर नवल दोउ देखत ही मत भई भोरी॥ ६४॥

आज तुमें होरी खिलाउंरे जाविक नेनरे। नागर नवल किशोर ख्याल तुम कोने सिखायौरे। झटकन में चौली कस टूटे पकर केसररँग वोरीरे। कर मसकत कसकत नहिं प्यारी नृपत कुँवर चिर चोरीरे। एसी अनोखो होरी मचावत केसो परी यह वानरे। लालन विहँस कहत प्यारी से होरी में क्या कानरे। अलीवृषभानकुँवर याछविपर वारवार वलिहारिरे है॥६५॥

सखी देखोरी मतवारो छैल यह नृपतकिशोर मोसे करत फैल। येसो ढीठ लाल दसरथ को रोकत है पनवट की गैल। सुनियत हते देखे नहिं आली रूप सहज तुमरो उरझैल। वृषभानु कुवर येही वर मागत जुगल चंद्र लख रहहिं महैल॥ ६६॥

आली एसो ढीठ यह नृपत किशोर मोसे खेलत वरजोरी होरी। एसो री लंगर नहिं मानेकही मोहि आनगही वहियां पकरी मोरी देखतही मति भई भोरी। अवीर गुलाल की मूठ चलावत वालत पिचक तक तकि री मोसे वोलत कह कह गोरी। अलीवृषभानकुँवर को फगुआ दीजे रसिक भक्त जारो रहे अटल सदा यह जोरी॥ ६७॥

अब खेलों न रघुराज लाल संग होरी। अपनी ओर को दुर दुर भागत पकर लेत वहियां मोरी। जे नये खेल सीखे कहँ लालन छल कर रँग चूनर वोरी। केसर कुमकुम रँग पिचकन भर अवीर गुलालन भर झोरी। वृषभानकुँवर मन भावन फगुआ निसदिन छवि निरखहुं जोरी ॥ ६८ ॥

एसी होरीमें करे वरजोरी पकर रँग वोरी लाल। मुख मल रोरी वइयांमरोरी चोलीके वँद छोरी लाज दई टोरी भला। मिथिला गोरी राज किशोरी होरी खेले कोरी करें झक झोरी लला। ओचक आवें पकर नचावें हँस अँखियाँ मटकावें कर चितचोरी लला। रसनिधि प्यारो राजदुलारो वृषभानकुँवर बलिहारो सिया सँग कीनी सला। ६९।

देखो मेरी रोकत है पनघट की गैल। रघुराजलाल मतवारो छैल। हो सरजू जल भरन जातती अनुज सखा लिये करत फैल। तनक न कान करत गुरजनकी अंक भरत भुज कंठ मेल। लाज भरी कुछ कह न सकत हों हाहा कर पिया भयो है झेल। वृषभानकुँवर की स्वामिन सियाजू इन वातन पिया दई है मेल ॥ ७० ॥

रघुवर अवधविहारी हमारी चनरी रंग डारी। भर पिचकारी मोरे सनमुख मारी भीजगई चोली सारी। हाहा खाय पाय पर लालन बहुत विनय कर हारी। अब मिस कौन लहुँ गुरजन से देखत देहैं गारी। जब देखो तब वन प्रमोद में आन मचावत रारी। वृषभानकुँवर से अवध श्यामरे नाचल हैं ऐसी यारी। ७१।

होरी के मदमाते आये कोटन देखत कामलजाये। अनुज सखा बहु संग लिये हैं गावत गारी लगत सुहाये। घूँघट खोलत मृदु मुसक्यावत गोल कपोल गुलाल लगाये। धूम मचावत रार बड़ावत अजब रँगीले ख्याल दिखाये। रामप्रिया लख जुगल माधुरी वारवार हिय नयन सिराये॥ ७२॥

अति लंगर खिल वार अवध पिया। मोसे डगर चलत करे रार अवध प्रिया। सास सुनेगी रार करेंगी ननद देय नित गार। पुरजन लखलख घैर करत हैं रसनिधि कोनी ख्वार।७३।

अनोखो खिलवार डारे अबीर मेरी आँखन में। रँग केसर ऊपरतै बोले आम अचानक घूँघट खोले करमोजत चोली दई फार। हो हो करत आज होरी है पकरत हँसत नवलगोरी है नृतसुत भयो बडो रिझवार। गावत गारी रार मचावे चलत चाल वह ख्याल बतावे लूटत मन धन हैं वट वार। ख्वारी करतकहों नहिं मानत जाको मिथलापुरको जानत रामप्रिया रघुनंदन यार॥ ७४॥

होरी में बरजोरी करै एसी नवलानार। धीरे आवै नजर बचावै है असंक नहिं नेक डरावै मुखसोंगावै मधुरी गार। कुम कुम कीच कपोल लगावै कोउ नहिं वहियाँ गहिपावै है लंगर बाकी खिलवार। सब सखिअनते आगे आवै सैन चलाइ मधुर मुसक्यावै खेलन बाल बडी होसयार। छलबल कर प्रीतम ढिग आवै रामप्रियादै सैनबुलावै पकर लखे नृपसुत रिझवार॥७५॥

ऐसी रँगीली नार परस्पर खेलत होरी। राजिवनैन विसाल

चलन गजिगत गरवीली छलबल कर वरजोर लला मुख मलदई रोरी। प्रिया पीतांवर छोर गहौ तब नवलकिशोरी जायो लला कहाँ भाग बनावहुँ तुमको गोरी। प्रीतम परम सुजान सैनमें कहैं कर जोरी। जो मागौ सो लेहु उहाँ न करौ वरजोरी। रामप्रिया वल जाय सदा यह जोवै जोरी ॥ ७६ ॥

होरी में वरजोरी चलाई। मेरे नैनन गुलाल रमाई रावरे खेलन की यह रीति न प्यारे रसमें अनरस अनख बडाई। कबहुँ दावपरेगौ हमरो अनुज सहित पिया लेहों नचाई। रामप्रिया पिया तिया बनाहों सिया ढिग फगुआ लेहों मगाई ।७७।

अब काको चलै वरजोरी पिया कहौ खेलनमें। बहुत दिनन रसमाते डोले बोले अटपटे बैन परे आज केलनमें। लेहों छीन करते पिचकारी सारी घूँघट काढ चलौ त्रिय गालन में। विनय पत्र .लिखवाय प्रिया से रामप्रिया वल जाय ललाजूके बोलन में ॥ ७८ ॥

आवो छैल तुमें होरी खिलावें मनभावै सोई लाल करावें। सखो सिरमौर गहे मनभावन केशर रंग वरसावें। अबीर गुलाल कपोलन मीजों नार सिंगार बनावें काम कलकेल सिखावें। कंज नैन अंजन से आंजो वेंदी भाल लगावें। कस कंचुकी चूनर सिर घूँघट जावक पगन रमावें ललीजूके पाय परावें। कुसुम माल सो बाँध रसिकनिध सियाजू से हाथ जुरावें। रामप्रिया जब छोरें छबीले तब प्यारी फुरमावें तुमें द्रग कैदकरावें ॥ ७९ ॥

मगरोकत नित आयरी भयो अनोखो खिलारी। अनुज

सखा लिये धूममचावत चूनर पकरत धायरी। बरबस गहत कहत होरी है मुख सों गावत गाररी। झकझोरत वोरत रंगकेशर चीनत मिथला नाररी। अबीर गुलाल कपोलन मीजत किहि विधि होय निवायरी। गुरजन लाज छैल अरवीलौ कासों कहिये जायरी। मानत नहिं विनय काहूविधि करत आय मन मायरी। फागुन लगत करत नित ऊधम वनतनको रिझवाररी। रामप्रिया श्रीजानकीजीवन मोहीतें वडा वतराररी ॥ ८० ॥

लाल नई नौखो होरी खिलाई। मोह पकर करत वरजोरी नये खिलवार अनोखौ नृपसुत अवनकरौ लगुराई। जान देउ वडरार न कीजे अनरस में रसजाई। कर पकरत झकझोरत मग में मानों मोल विसाई। जाओ चलो नहिं फैल दिखाओ इहाँ न चले ठकुराई। सुन रसवचन गूढवनतनके जानो प्रीति सवाई। रामप्रिया श्रीजानकी जीवन लीनो कंठ लगाई ॥ ८१ ॥

आज अवधपुर होरी मची है। जनकसुता अवधेश छेलवर अलिन वृंद नवरंग जचो है। अबीर गुलाल धुंध अति वाड़ी ढोल मृदंग अवाज खची है। कोई सखी पकर कपोलन मीजत कुंमकुंम केशर धूल रची है। अलीवृषभानकुँवर छवि निरखत प्रियप्रीतम के प्रेमनची है ॥ ८२ ॥

होरी या रंग धूम मचाऊँ। जोपै रघुनंदन पाऊँ। आवत ही कसके भृकुटी सर केवल ताह हसाऊँ। फेर उमंग सुरंग भरी वहुअंग अनंग लजाऊँ निहार के नैन सिराऊँ। छीन सवै ढप चंग मृदंग सुसंग सखान वनाऊँ। छैकी भली विधि सो जुअली

करनाच नचाऊँ। लैवरवंदन चंदन चूर कपूर की धूर उड़ाऊँ। धूधरमें घसलाल गुलाल के धाय धमार मचाऊँ तहाँ तव तैसऊ गाऊँ। खंजन से द्रग अंजन आज निरंजन जाम बहाऊँ। लेकर मंजु सुरंग गुलालन लाल कपोल लगाऊँ दुहु करताल बजाऊँ। हो इतसो अलबेली बनी खिलवार न खोल खिलाऊँ। मेरी रीझो रिझवारन जो खिलवार कहाऊँ नातो फिर खोलन आऊँ। अली बृषभान विलासन सो हियहाँस हुलास सजाऊँ। निरहु निसंक निसंकन पाइ मयंक मुखी वरपाऊँ सदावलहारिहु जाऊँ ॥ ८३ ॥

रसमाते लालन होरी के अनुराग भरे नवगोरीके। अंजन नेन गुलाल रमाये बाँके लगे बान द्रग गोरीके। झूलत चलत नेह मद छाके आवत महल किशोरीके। रामप्रिया विचित्र छबि देखत नागर खेल खिलारीके। ८४।

भयो छैल खिलारी होरीकौ येहो नवनागर रस चोरीको। विपन प्रिमोद सखन संग विहरत मातग रोकत गौरीको। हो हो कर धावत भुज पकरत वंदतरकावत चोलीकौ। रामप्रिया अन रीति चलावत खेल करत वरजोरीकौ ॥ ८५ ॥

मग रोकत वाल खडो आली संग सखन वांधेपाली। लागत फाग करत नित ऊधम गावत गारी देतारी। विनय करत येको नहिं मानत मूठ गुलाल नेनन घाली। रामप्रिया किहि भांत निवहिये राजकुमार वडो जाली ॥ ८६ ॥

होरी खेलत आज नृपत प्यारो सुघर खिलारो मतवारो।

झूमत झुकत चलत मग सजनी ओढ़े पीतवसन कारौ। अबीर गुलाल उड़ावत आवत रंग भर पिचक कुचन मारौ। रामप्रिया प्रियाभुज गह लीनो सखन संग से कर न्यारौ ॥ ८७ ॥

देखो छैल छबीलो चलो आवै वडी वडी अखियां भटकावें। दूसर गैल चलौ अब सजनी राजकुंवर नहिं लखपावें। नहिं तो छेड लेह आगे से रस वतियां कह अटकावें। रामप्रिया होरी अवसर मानत नहिं रंग लेधावें ॥ ८८ ॥

जोमें अवध छैल कहुँ पाऊं मनके नाच नचाऊं। सीसफल वेंदी सिर देहों अंजन नेन लगाऊं। अबीर गुलाल लगे हों मुखसों गुलचा गालन लाऊं। कंचक लहगा सुरंग चूनरी अपनें कर पहराऊं। ऐसी नार वनाऊं लाल को रती सची निदराऊं। रामप्रिया श्रीजू स्वामिनि के विजलनिसान वजाऊं ॥ ८९ ॥

पिचकारन रंगभर लावै जो मनआवै सोई गावै। उड़त गुलाल अबीर अरगजा ढप मोचंग वजावै। वड़े भाग होरी दिन आये लेले हृदय लगावै। रामप्रिया सहचरी प्रमुदित मन चरन कमल चितलावै ॥ ९० ॥

देखो नवल खिलारी होरी कौ प्रीतम राजकिशोरी कौ। वलहारी यह रूप माधुरी अलगन चंद्र चकोरीकौ। हाथ गुलाल कनक पिचकारी हँस चित चोरत गोरीकौ। कामकरोर कोट लख वारों किहिं पट तरये जोरीको। रामप्रिया ऐसो रसनागर खेल करै वरजोरी कौ ॥ ९१ ॥

❀ लेद ❀

जिन चालो मूठ गुलाल अवध पिय नैननमें भरजाइगी। अरेहां हो अवध पिया देखने दो मुख चंद्र कोजासों तन की तपन बुझायगी। अरे हांहो अवध पिया अधरसुधा रस दोजिये सब कहहों मो मन भायगी। अरे हां हो विनय सुनो रामप्रिया फगुआ चहत निज महल टहल को पाऊंगी ॥ ९२ ॥

तुम कैसी करत अनरीत रसीले मगरोकत झझकोरके। मोरे प्यारे अवध पिया झझकोरी वरजोरी है जामें कैसैं रहे रस रीत। बलहारो छैल पर नीत प्रीति जानत सदा श्रीरामप्रिया के मीत ॥ ९३ ॥

तुम स्याम सलौने छैल हमारो लाल चूनर मतिवोरियौ। अरे हाहो स्यामलिया जो चूनर रंगडारिहौ तेरोपगिया करौं सरवोर। अरे हांहो पियरवा रामपिया साची कहों मैं देहों रंगीली गार ॥ ९४ ॥

मनभावन राजकिशोर सखीरी यार हमारें श्यामरौ। अरी हाँरी सखीरी सुखसागर जबसें लखौ मोह छिन पल परत न चैन। अरी हारी सखीरी विरह पीर दिल में उठो कोउ नैनन देउ दिखाय। अरी हारी सखीरी तो यश मानो बहुतके पिया रामपियहिं मिलजाय सखीरी यार हमारौ ॥ ९५ ॥

छलिया नृप राजकिशोर सखीरी आय अचानक रोक लियौ ॥ अरी हारी सखीरी हों सरजू जल जातती अरु संग सोह पनहार। अरी हारी सखीरी सारी सरस भिजाईयौ अरु

मुखसे मलत गुलाल । अरी हारी सखीरी रामप्रिया कर पकरके हँसि नैनन सैन चलाय ॥ ९६ ॥

तुम सियावर राजकिशोर हमारो छैल गैल मति रोकियौ । अरे हारे अवधपिया झकझोरत दुलरी गिरी मोरी नाजुक वैया । मरोरौ ना लगरवा । अरे हाहो अवधपिया रामप्रिया घर जानदे तेरी वारवार वलजाऊँ ॥ ९७ ॥

अरी हाँरी सखीरी चितवन में मन मोलिय रघुराज हमारौ यार । हों सरजू जल भरन जातती सब संग सोहैं पनहार । अरी हारी सखीरी धूधर अबीर गुलाल की जहँ तन मन रही न समार । केशर रंग पिचकारियाँ कुमकुम खौर लिलार । वृषभान-कुँवर को दीजिये हियरेकौ नेह निहार ॥ ९८ ॥

जिन जइयौ भरन कोउ नीर कुँवर दोउ ठाड़े सरजूतीरपै । अरी हाँरी सखीरी हाथलिये पिचकारी अरु ओलनभरैहैं अबीर । अरी हाँरी० ढप मृदंग की घोर सुन बहुवाजत मधुर मजीर । वृष-भानकुँर कौ दीजिये श्रीमहारानी जू कौ चीर ॥ ९९ ॥

डगरमें छेड़ै अकेली जानके रसमातौ नृपतिकिशोर । मैं दधि वेंचन जातती सखी वनप्रमोद की ओर । अनुज सखा संग में लिये फिर हेरत हमरी ओर । वृषभानकुँवर कौ हँस मिले पिया मो चितके चितचोर ॥ १०० ॥

पनघट कौ रोकै घाट भरन को हम न जैबूरे । अनुज सहित मेरो मारग रोकै हँस हेरै मेरी ओर । हों वरजो वरजी नहिं मानत राजकुँवर चितचोर । चुवत रंग चोली चुनरी कौ

बाजत ढप घनघोर। फगुआ लैहों जान न दैहों पीतांबर लेऊँ छोर वृषभानकुँवर रंगभर पिचकारी पुन पुन करत निहोर।१०१।

तुम कैसी करौ वरजोरी झपट मोरी चोली गही नागर नवललाल मतवारौ रस सागर चितचोर गही वरजोरी लला। ऐसीबान कहापरी प्यारे छैंकौ अकेली जान करौ मन भावै लला। निपट असंक कहौ नहिं मानत भये अनौखो खिलवार देखो मैंने तेरो कला। वृषभानकुँवर कुमकुम रंग घोरें अनुज सखा लिये साथ करत हो भारो हला ॥ १०२ ॥

तुम साची कहौ नृपलाल अवधपिया फेर दरस कब दीजियौ। अरे हाँ हो रसीले तुम बिन पल जुग जायँगे अति विरहा जोर जनाय। अरेहाँ हो सजनवा वेग सदेशे भेजिये मेरौ जो तुमरे आधीन रसिक वर वेग दरस मोह दीजिये। अरेहाँ हो अवधपिया रामप्रिया छविलख छकी मोह घर अँगना न सुहाय ॥ १०३ ॥

❀ फागें ❀

भयौ छैल खिलारी होरी कौ येहौ नवनागर रस चौरीकौ। विपन प्रमोद सखन संग विहरत मग रोकत नव गोरी कौ। रामप्रिया अनरीति चलावत खेल करत वरजोरी कौ। १०४।

श्यामलिया छैल छबीली कौ। प्रीतम राजकिशोरी कौ। सिर पर ताज जुलफ घुँघरारी भालतिलक दियेरोरीकौ। सखन सहित मग ढाडौ आली करत खेल जोरा जोरीकौ। रामप्रिया रस रास मचावत भाव करै चितचोरीकौ॥ १०५ ॥

मग रोकै हमारौ भोरईते आवै। विपिन प्रमोद कलित कुंजन में रस बरसावत आवै। निकसत नहिं निवहत रमनी मग हठि बरबस धरिलावै। डारत शीस रंग केशर कौ वदन अबीर लगावै। धर बहुस्वांग नचत नानाकिधि वाज बजावत गावै। लहि चरु भाग प्रगट जननीकौ यशकुल शील किम पावै। अलिगन मद्ध सखा बंधुरजुत अति अद्भुत छवि छावैं। अलीवृषभानकुँवर मेरो मन हरि निज संग रमावै ॥ १०६ ॥

राजकुँवर गरवीलो मोसे खेले अनोखो होरी लाल। तनक न लाज करत गुरजनकी रोके वाट रसीलौ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल पीतवसन चटकीलौ। पनघट रोकत रार मचावत पेंड़ेपरोहै नवीलौ। रामप्रिया हँस-हँस वतरावत मानत नाहिं ठगीलौ ॥ १०७ ॥

नागर नवल खिलारी मोईकौ भर पिचकारी मारो लाल एसी घाली कुचन विच लागी भीजगई चोली सारी। छैकौरी अव जान न पावें झटकौ पीत पिछौरी लाल। रामप्रिया एसो रसनागर नृपसुत ढोठ वडौरी ॥ १०८ ॥

॥ फाग ॥ सुनके अवध लालकी होरी जुरआई सबगोरी। अबीर गुलाल उडावत गावत केशर रंगमें वोरी। कंचनकी पिचकारन भरभर मारत जनक किशोरी। रामप्रिया सहचरी वर मागत चिरजीवै यह जोरी ॥ १०९ ॥

॥ फाग ॥ अवध छैल मतवारौ देखौ नयौ भयौ हुरयारौ। अब इतते कहुँ जान न पावै हूहै नैनन को तारौ ॥ गलिन

गलिन बहु गारी गावै लैलै नाम हमारौ। काजर आंज नयन मुख मीड़ौं गालन गुलचा मारौं। इतते पकर सखी उत प्यारी पोखत वैस हमारौ। रामप्रिया यह नारि भेष लख रमा रती मद वारौं ॥ ११० ॥

॥ फाग ॥ जाहोरी खेलें सहित अली रघुनंदन और जनक लली ॥ इततै केशर रंग बरस रहौ उतते मूँठ गुलाल चली। चोवा चंदन अतर अरगजा दुहूँ ओरते धलाधली। लपटझपट झटकत तन चूनर करक गई है चंपकली। रामप्रिया सहचरीकी स्वामिनी कहत दई तुम धूरमली ॥ १११ ।

॥ फाग ॥ छबि बिसरत नाहिं बिसारौरी। जबसे पिया रूप निहारौरी सिरपर ताज जुफल घुँघरारी बड़ेबड़े नैंनन वारौरी। मृदु मुसक्यान लखी सखी जबसे मोचित भयौ मत वारोरी। कब देखौं महबूब द्रगनभर अब कछु जतन विचारौरी। रामप्रिया वलहारी छेलपर तन मन धन सब वारौंरी ॥ ११२ ॥

॥ फाग ॥ श्यामलिया छैल सलोनारी। वांकी रस चितवन में टौनारी। वन प्रमोद में छैकलई मोइ गुरजन की वाको भै नारी। हौं छल नहिं जानत वयथोरी अबहिं आई गौनारी। रामप्रिया कंपत जिय भयवस मुखते कढ़त न वैनारी ॥ ११३ ॥

॥ फाग ॥ तेरे लगन लगौनें नैंना। प्यारी सुदर श्याम सलौनें लाल। चंचल चपल मीन खंजन से रूप जाल अरुझौंने। समर शूर संग्राम करन को कामवान से पैंनें। रामप्रिया वलहारी प्रीतम मोजियप्रेम ठनौंनें ॥ ११४ ॥

॥ फाग ॥ प्रीति करीती हमनें तुमनें कैसी भूलन ठानी लाल। वदन और तो कहन और भई रैगई एक कहानी लाल। प्रेमवंज हम तुमसंग कौनौ नफानेह जियजानो लाल। कहाँ गई रीति प्रीति पाछेकी अबतो नीत पछानी लाल। रामप्रिया प्रीतम अपने हो येही भलाई मानी लाल ॥ ११५ ॥

॥ फाग ॥ मनमोहन राजकुँवरके देखो नैन विदेह सुताके लाल। वरनौं जन मन आनंद घरके सीलसिंधु समताके। नील कंज कजरारे प्यारे प्रीतम प्रेम सुधाके। रामप्रिया वारी छवि ऊपर लखे भाग वड़ताके ॥ ११६ ॥

॥ फाग ॥ इनसे प्रीति करी पछितानी लालन पीर न जानी। हम जानी ती और निबाहैं कठिन निठुरता ठानी। जल विन मीन दीन तलफत है एसी विपत कहानी। रामप्रिया कँह लगन कूटनी कौन जाल अरझानी ॥ ११७ ॥

॥ फाग ॥ श्यामलिया नैंनन लागौरी। रतिपति तन मन जागौरी। जबसें लखो सामरी मूरत विरह ताप दिल दागौरी। किहिं विधि मिलन होय आलीरी जतन करौ दुख त्यागौरी। रामप्रिया कौ वेग मिलावहु भुजभर प्रिय अनरागौरी ॥ ११८ ॥

॥ फाग ॥ खेले कामिन अनुराग भरी करकमलन लिये फूल छरी। देखौ खेल खिलारिनके ढिंग गावत गारी प्रेम भरी। नख सिख सुभग सिंगार किये सब देखत रतिमद मान हरी। भीजे वसन लगे अंग लिपटन कवरी पीठ भुजंग परी। रामप्रिया अद्भुत रसि देखत विहँस कही मरजाद टरी ॥ ११९ ॥

॥ फाग ॥ नहिं तो नेह नदी बह जाना । माया मोह कूल दोऊ तट विषय जलाशय माना । दुख सुख कमल प्रफुल्लित जामें मोमन भ्रमर भुलाना । नौकानाम कृपाकेवट है करिया श्रीगुर ज्ञाना । रामप्रिया मोह पारलगैंहैं महलटहल असथाना ॥ १२० ॥

॥ फाग ॥ पिया मन वसरये नेना प्यारी के रसि मतवार सिया गोरीके । निरखत रहत चेननहिं आवत परे पेंच रस भोरी के । अंग अनंग भरे दोउ दाव लगे नव जोरीके । रामप्रिया लख जुगल माधुरी श्रम जल बुंद कलोलोके ॥ १२१ ॥

॥ फाग ॥ रसिक सवादी नेना तेरे घूँमत रसमतवारे लाल । चपल चाल खंजन से सुन्दर भवँर भौंर कजरारे । अटके मोद्रग वसकर राखत मदनवान अनयारे । रामप्रिया नागर प्यारी को राजकुँवर चितचोरै ॥ १२२ ॥

॥ फाग ॥ जोमन भजन करत अलिस्यावै म्रग ज्यों जल को धावै । परदारा परधनके कारन नाहक रार वडावै । सीता पति जशगान करत नहिं माया मोह फसावै । रामप्रिया कह अवसरचूके फिर पाछे पछतावै ॥ १२३ ॥

॥ फाग ॥ रसमाते नयन बिहारीके । चंचल चपल खिलारी के । खंजन मीन कंज छवि लाजत अंजन जुत मतवारेके । तिरछी तकन भरै रस सागर मति गोता दैन हमारीके । रामप्रिया वारी छवि ऊपर प्रीतम राजदुलारीके ॥ १२४ ॥

॥ फाग ॥ देखौ मनकी अजब कहानी मतसर रहत दिमानी । सीतापति सनमुख नहिं आवत जहाँ प्रेम रसखानी ।

बहुत भाँति धिक्कार देत चित आवत नहिं गिलानी। रामप्रिया करमन बस भूलत सार वस्त नहिं जानी ॥ १२५ ॥

॥ फाग ॥ रतनारे नैंना बड़ेजाली राजकुमार चतुर आली। चंचल मीन खंज कजरारे मनमथ बान सरस चाली। झूमत झुकत बड़े मतवारे लख अवलन तिरछी घाली। रामप्रिया छवि रूप लुभानी नहीं प्रेम हितके पाली ॥ १२६ ॥

॥ भैरवी ॥ देखो राजकुँवर रोकै गलियाँ जिन जइयौ नारि भरन पनियाँ। पनघट रोकत गगर सिर फोरत मृदु मुसक्याय गहत बैयां लंगर ढीठ करै बरजोरी छांड़त नांह करै रारियां। रामप्रिया एसौ रस नागर औचक आय लगै छतियां ॥ १२७ ॥

॥ रसिया ॥ रसिया मेरौ छैल अवधवासी। मृदु मुसक्याय दिखाय वदन छबि चितवन में डारै फाँसी। खेलत रंग भरे सिय स्वामिन पिचकन झरकर मघरासी। वृषभानकुँवर कौं फगुआ दीजै महल टहल खिदमत खासी ॥ १२८ ॥

॥ रसिया ॥ रसिया बिन देखैं मुह कल न परै। हौं सरजू जल भरन जाततो मदु मुसक्यायकैं अंक भरै। राजकुमार लाल दसरथ कौ हँसहँसिकै रसि बतियाँ करै ॥ वृषभानकुँवर मन येही लालसा पदसरोजसैं चित न टरै ॥ १२९ ॥

॥ रसिया ॥ चिरजीवै होरी कौ रसिया। सानदार सह जोर सजीलौ मदन लजीलौ मन बसिया। अजब नुकीलौ रँग निचरीलौ पैंचखसन माथेलसिया। मुकुर कपोलनपर अलकन छवि छलकन पलकन गति नसिया। रुचिर रसीले नैंन अनीले

अंजन सान मनौ गसिया । मंद हँसन दुति चारु चमंकत दामिन जनु मनोज असिया । झपट लपट झटकन र ग छिरकन अवलन मसलन मुख वसिया । सिया सुकुमार निहार खेलु मिल वृषभानकुँवर कौ दिल फसिया ॥ १३० ॥

॥ रसिया ॥ छाकी छाकीरे छैल मतवारेसें । कौसिलराज किशोर शामरो नव जोवन पिय प्यारेसें । कुंडल लोल कपोल अलक छवि हँसिहेरन मतवारेसें । अलीवृषभानकुँवर मन भावन अवध छैल मौतीवारेसें ॥ १३१ ॥

॥ रसिया ॥ होरी खेलत आज नवल रसिया । पकर भिजावत रंग में गोरी वरवस झपट लगत छतियाँ । मुख मल रोरी करै झकझोरी ठोड़ी पकर कहै रस वतियां । वृषभानकुँवर अलि रसिक शिरोमन मानत नाह अजब गतियां ॥ १३२ ॥

॥ रसिया ॥ होरी खेलन आज रसिया महल पधारौ । अबीर गुलाल कनक पिचकारी मृगमद केसर साज । अनुज सखा एसेकै छैंकौं जान न पावैं भाज । नार सिंगार भाल वैंदीदै द्रग काजरसै माँज । चूकक्षमा करिये मन भावन तुम मेरे सिरताज । रामप्रिया सिया स्वामिनजीतें हारें श्रीमहराज ॥ १३३ ॥

॥ फाग ॥ आली होरही चोव नगारनकी देखो राजकुँवर के आवनकी । ओड़ छौड़ कतहूँ नहिं दीसत उड़त धुजा पियरे पटकी । जो प्यारी आयुस हम पावै भीर भजावैं छैलन की । रामप्रिया प्रीतम गहल्याउँ राखों शान किशोरी की ॥ १३४ ॥

॥ फाग ॥ देखौ रसिया छैला होरी कौ रसिक सवादी गोरी कौ। केसर नीर सोसतै डारत खेल करत वरजोरी कौ। रामप्रिया जान न पावैं पकरौं पीति पिछौरी कौ ॥ १३५ ॥

॥ रसिया ॥ रघुनंदन रसिया आयौरी। अनुज सखा सब संग लियै हैं सिय महलन धूम मचायौरी। उततै पिचक चलावत नागर गजब खेल दिखलायौरी। सिय अनुसासन पाइ अलीगन मूँठ गुलाल चलायौरी। वृषभानकुँवर लखि जुगल माधुरी उर आनंद न समायौरी ॥ १३६ ॥

॥ रसिया ॥ प्यारे तुम नाहक रार करौ नृपत लाल मेरे पैंडैं न परौं। खेलत में अति अनख वड़ावत अवध छैल छल वहुत करौ। भरि भरि मूँठ गुलाल चलावत नागर नयनन माँझ भरौ छलवल कर रोकत जुवतिन कौ समुझ नेह जिय माँझ हरौ हार जीत सब होत परस्पर वृषभानकुँवर कहँ धीर धरौ।१३७।

❀ पद ❀

यह औसर अनुराग भाग कौ फाग बिलास नवीन। करन जोग हटि नैक हटोलो उचित तुमहि दरसीय। तव मुख शशि मम नैन चकोरन किरन मुदित मलीन। जहँ तव अंश भाव किंचित तहँ होत मोर चित लीन। यह मंडल सब रूप रावरौ मुमका को हिय कौन। हिय हुलास भरि गमन प्रमुदवन करु मोहि प्रमुद अधीन। अलीवृषभानकुँवर मन वच जुग पदपंकज रस मीन ॥ १३८ ॥

मिलौ इतै श्रीरघुराज किशोर। करुना करन हरन दुख दूखन विश्वविलोचन चोर। श्याम तामरस दाम रुचिरि छाव वारौं काम करोर। सजल जलद अभिराम रुचिर तनु कबहेरौ मेरी ओर। रामप्रिया मुखचंद्र दरशबिन तरसत नयन चकोर ॥ १३९ ॥

॥ अथ संभ्रम मानलीला ॥

दोहा—सुर पालक सुत वांमकी सोपत्री अभिराम ॥
करषि चंग प्रभु वांचकैं राखी पास ललाम ॥ १४० ॥
इक दिन रास विलास में सिया कृपा कछुकीन ॥
पाती प्रीतम पासतैं अकसमात गहलीन ॥ १४१ ॥
उक्ति लिखित वांची सबै सांची प्रीति निहार ॥
मान करन राची सुमति नाची रस गतिधार ॥ १४२ ॥

॥ पद ॥ मान गत सीय गही रमनीय। सुरनायक सुत वाम पत्रिका वांचि लिखी सुच हीय। तामधि भ्रमित भावभूषित गुन दूषित विध पुनकीय। मौन भई जनुरही रोसरति हित मित चिंतति हीय। रामप्रिया जब देख रुचिर अति विसमित मानस पीय ॥ १४३ ॥

दोहा—सियमति में गति मान गुन प्रीतम परमसुजान ॥
वचन सुधारस तैं सरस बोले प्रेम प्रमान ॥ १४४ ॥

❀ श्रीमान प्रीतम राजकिशोर जू के वचन ❀

तेरेही शरनरहौं मृगनैंनी मानतजौ हँस बोल री मानिनी। आगै खड़ौ करजोर दयानिधि अबकी चूक क्षिमाकर कामिनी।

तृषित जान अधरामृतदीजे हैमेरी तुहीधन भामिनी। करुणाकर मिथलेशनंदिनी तेरी गति मोहि अंत न ठामिनी। सुखनिवास कस रूस रही अब तुम बिन अंत कहाँ थल पायनी। प्यारी सत्य कहौं सुनलीजे अनत न जाउँ कहूं इक जाभनी। सदा मिहिर राखौ मोऊपर रामप्रिया सहचरी की स्वामिनी॥ १४५॥

॥ समाजी वचन॥

दोहा—सुनत प्रान प्रीतम वचन साँचे सरल सुभाय॥
भूरे भावन भूल सिय बोलीं कछू अनखाय॥ १४६॥

॥ श्रीमती मिथलेशकिशोरीजी के वचन पद॥

जाओ प्रीतम मोय छल न सुहावै। बात बनावत लाज न आवै बहुत कहौ मुह रोस बढावत वार वार अब नाह खिजावैं। बोचित चढ़ी भरी दिल अंदर जाओ भलै वेही सुखपावै। प्रीति की रीति कठिन मनभावन गाँठ गहैं रस ऊख न आवै। पड़े कपट चटसार रसीले कहौ तुमै कैसै पतयावैं। विनय करत दृग ओट रहौ अब जेही बात हिय से भल पावैं। सनमुख खडें कछू कह आवै अनरस में रस नाहक जावै। जिय कछू और कहन तव मीठी बात तुमै कोटन कहआवैं। रामप्रिया के रसिक शिरो मनि दिलकी लगी कौन लखपावैं॥ १४७॥

दोहा—कपट चतुरता रावरी जान परी भरपूर॥
जाउवहीं जहँ भावती जियकी जीवन मूर॥ १४८॥

॥ समाजी वचन॥

दोहा—मान प्रियाके वैन पर सुनि सानद रघुनंद॥
वचन मृदुल मंजुल मधुर बोले आनदकंद॥ १४९॥

॥श्री मान कोमार के वचन पद ॥

तन मन हाथ विकौ तुमरे प्यारी जाउं कहां को पीर निवारै। जीवन धनधरम निरंतर तोबिन को सुख सार समारै। यह जियजान द्रवौ करुणाकर तुम बिन अनत कहां थिति पावै। मदन नृपति अब जोरजनावत प्रिय सौ विमुख जान चढ़धावै। सुख्य समुद्रतैं दूर परोअब सोचत ही निशनींद न आवै। रामप्रिया हित हेर हर्ष हिय क्यौंना सुहृद मौकौ पतआवै ॥ १५० ॥

दोहा—सुख सागर विश्राम तुम, श्रीनिमराजकिशोरि।
मन भोरी गौरी सुनौं, मोहिय गति चितचोरी ॥ १५१ ॥

समाजी वचन

दोहा—सुन मिथला पतिनंदनी, श्रीरघुनंदन वैन।
बोली बचन विचित्र अति, चित सूचक सुभ चैन ॥ १५२ ॥

श्रीमिथलेशकिशोरी वचन पद

जिहिं वाम लिखी हित की पतिया तिहि को मिल जाय करौ वतियां। परनार रसीलीवसी मनही नहिंनीद परै घरकी सिजियां। अब चनकरौ रस जायभरौ जिहिं चिंततजात सबै रतियां। सुरनाइकनंदन वांम वहैं तिहिहौं तुमसों रसकी घतियां। इत काम नहीं चलिजावौ वहीं चितचैन करौ लागौ छतियां। कहँ रामप्रिया वलजाऊँ लला जिनके अनुराग पगी अँखियां ॥ १५३ ॥

जावौ जु जावौ बनै उनही सौं बातन रार बडावत हौ अब। जावकभाल लगौ वा पगकौ अंजन अधर कपोल पीक फव। बिन

गुन माल पीक करकंकन बलिहारी जिन साज सजौ सब। सारी ओड़ दिखावतहौहिय पीतांवर रसमें वगसो जव। रामप्रिया कह धन्य यह छविकौ कहौ कैरे वरनै कोई कव ॥ १५४ ॥

समाजी वचन

दोहा—प्रान प्रिया के वैनबर, सुनि प्रीतमसुखदैन ॥
विनय बचन बोले मृदुल, सूचित कर हित ऐन ॥ १५५ ॥

॥ श्रीमानप्रीतम राजकिशोर के वचन ॥

॥ पद ॥ हे प्रान प्रिया कीजे मरजी अपराध नहीं मानौं अरजी। अति दीन भयौ तुम मानठयौ करुनाकर कैसी गही फरजी। अव मिहिर करौ चहु रोस धरौ सुखहिंधु सदा तेरौ करजी। कहँ रामप्रिया सुनिये अरजी विधि आनंद मूर तुही सिरजी ॥ १५५ ॥

दोहा—प्रानप्रिया मेरी तुही, जीवन प्रान अधार।
विनय करत कव कौ खड़ौ, क्यौं न लखत रिझवार ॥ १५७ ॥
मृगनैनी श्रीजनकजा, जीकी जीवन जोर।
को चुगली तुमसौं करत, वैठतहौ मुखमोर ॥ १५८ ॥

समाजी वचन

दोहा—प्रीतम परमप्रवीन प्रभु, बचन सुनौ सिया वांम।
सापराध मनमानिके, नहिं वोली तिहि जाम। १५९।
तुम प्रीतम प्रभु स्यामरे, सहिचरी एक अनूप।
तिहि प्रवोध दूती करी, सो आई हित नूप ॥ १६० ॥

करप्रनाम सिया पदकलम, दूती अमल अमंद ।
मधुरबचन मनहारकर, बोली सुचि सुखकंद ॥ १५१॥

मिथलेश किशोरी जी वचन

॥ पद ॥ जाओ जाओ रे पिया रहौ दूर दूर ॥ अवध छैल दिलदार यार तुम अपनी गरजके पूर पूर । जो कछू और कहन कछू औरहि वातैं वनावत भूर भूर । जो मनवसी रसी अपनै दिलताके रही हजूर जूर । रामप्रिया पिया पैयां परत हौं जियन जरावहु तूर तूर ॥ १५२ ॥

राजकोमार वचन

माननि मोरी अरजी मानमान । जो कछू चूक परी है हमसौं सो कामिन दियौ जान जान । शीलसिंधु गुण खानि रूपनिध विनवत जोरत पांन पांन । चन्द्रवदनि हँसि हेर खोलद्रग अधर सुधारस सान सान । अलीवृपभानकुँवर स्वामिन अव अव न करौ रिस ठांन ठांन ॥ १६३ ॥

एकसखी प्रिय दूती बनाकर भेज दई सियके ढिग आई । नाय कमलपद सीस कहौ प्यारी कहिये आज गही निठुराई । अतिहट नीकी नहीं जिय जानौ मानौ सवकी वात भलाई । दीन भये जिमिमीन विनाजल रामप्रिया मिलिये सुखदाई ॥ १६४ ॥

दूती वचन

स्वामिनी अर्ज मेरी मान लीजे । ना जिय येती धरौ निठुराई अति हठि नीकी नहि जिय जानौं । मानौ सवकी वात भलाई जीवन मूर सदा पिय कौं तुम सत्य कहौं नहिं वात

बनाई। खेलत चंग गई सुरपति पुर तौ प्रिय जयंत तिय पाई। सुनप्रभु नाम भई मोहित मन पाती लिख तिहिं पास पठाई। सो पियापास रही देखी तुम तातै भूमित भई मति भाई। निर अपराध तव नाथ निरंतर अंतर कछू ना प्रीति सरसाई। दीन भयौ जिमिमीन विनाजल रामप्रिया मिलिये सुखदाई ॥ १६५ ॥

मान माननी मान न कीजे। रिसमें रसरंग जात रसीली रसियाकी वतियान पतीजे। जान सुजान जान दीजे अब गये ग्रामकौ नाम न लीजे। समुझ सुघर गरलाग प्रीति सों रामप्रिया तेरे सुख लीजे ॥ १६६ ॥

समाजी वचन

पद ॥ वचन सुन सखी मन चाहकरी। मान गई गति जतन हेत कछू ही तल सुमत घरी। सांच जान व्याकुल मनमा-वन हिय सुचि रीति अरी। रामप्रिया प्रीतम दुर देखत उर अभि लाख भरी ॥ १६७ ॥

मनकी मुख से वात कहौरी। नागर नवल प्रवीन सुहा गिल। तेरेही रूप रसिक रसमातौ ममजीवन तुम प्रान किशोरी। तुय मुखचंद्र चकोर मोरद्रग हँस हेरन मन चार लियौरी। राम-प्रिया तेरे सुख सागर से नाम विहारी मोर भयौरी ॥ १६८ ॥

हिंडोरा सावन

नवनागर अवध विहारी सिया सुख मारी हैं। सरजू सरस सुहाई पवन पुरवाई है। जहाँ सकल नार जुरआई पावस गुन गाई है। वन प्रमोद द्रुम फूले रसिक दोऊ झूलैं वांकी चितवन

लागै सूलैं मदन रस हूलैं। अलीवृषभानकुँवर वलहारी जुगल छवि प्यारी जुगजीवै श्रीजनक दुलारी जनक सुखकारो हैं ॥१६९॥

। दादरा। झूलैं दोऊ झूलना झुकन झुक झांको। झोका देत उमग आनदसौं चितवन मदन कलाकी। अरस परस प्यारी भुजदीनै सिया भुज कंठ पियाकी। वृषभानकुँवर यह रूपमाधुरी निसदिन हिय विच छाकी ॥ १७० ॥

लखौ यह पावस अधकाई। पिया विन लागत दुखदाई घुमड घन चहुँओर गरजै नही मानत मेरे वरजै। चमकबीजुली की जियतरजौ दिवसनिस तलफतलफ जाई। हरितवल्ली द्रुमल-पटावैं। व्रथा दिलभर दिल तरसावैं। रामप्रिया मिलौ गलै लावैं ॥ १७१ ॥

सावनवा आये आये। प्यारी स्याम न आये। मदन पीर दिल चूर चूर। देख देख नभघटा सुहाई लखलख मुरवा जिया हरषाई। आमकोडार कोहिलिआ बोलै श्रवन सुनत लगै कूर कूर। जाओ जाओ कोइ कोई पियाकौ मनावौ वार वार। विनय सुनावौ हम निस आसुनसै तन धोकै कहियौ हाल मेरौ पूर पूर। हाय हाय जिय तपन बुझावौ रामप्रिया द्रग द्रग दर-सावौ। देर होत हूहै पछताकै विरह अगिन तन तूर तूर।१७२।

सावन मन भाये भाये आली हरष देखिये नवल लता द्रुम झूम झूम। कहुँ कहुँ मुरवा बोलत डोलत कोहिल मधुर मधुर सुर बोलै बीरबधूटी जहां तहां सोभित चहुँ दिस हरो हरी भूम भूम। गरज गरज मघवा धुन छाई दमक दमक दामिन दरसाई चलत

पवन मीलत मन भाई वरसै वदरियां बुंद बुंद । मधुर मधुर रित मंगल गावैं रायप्रिया सिया लाल रिझावैं विपन प्रमोद मोद उपजावन अमित अलिनकी धूम धूम ॥ १७३ ॥

झूलौ पिया प्यारे झूलन मनभाई । इत घन गरजत विजुली चमकत पावस लगत सुहाई । सरजू तीर प्रमोद विपन में कुंज ललित सुखदाई । सुन सिय वचन हरष मन सखियां रचना विविधि वनाई । उभग चले दीनै गलवहिआं रामप्रिया वलजाई ॥ १७४ ॥

रसिक दोऊ झूलना झूलैं हो । नागर नवल किशोर रसिकवर श्रीसरजूके कूलैं । रसि रसि झोका देत परस्पर लखि लखि सखी दिल फूलैं । नयन कटाक्ष करत प्यारी पर मनहु मदन की हूलैं । वृषभानकुँवर की येही विनती रहहु सदाँ अनुकूलैं । १७५ ।

आयौ सखीरी सावन प्यारी । प्यारौ लाल लली संग प्यारौ प्यारी सरजू कूल पधारौ । प्यारी हरित भूम द्रुम प्यारे प्यारी मोरशोर सुरभारौ । प्यारी लहर अलीगन प्यारी प्यारी पवन सरस सुखन्यारौ । वृषभानअली प्यारी दंपतिछवि प्यारी भूषन वसन समारौ ॥ १७६ ॥

नवलघन नवलवन नवलझूला बनौ । नवल सिय राम सखी नवल आनँद रगो । वहत झझा पवन झुकत झोकन मिलत गहत पियअंस जब रमकवाहनलगी । प्रेम प्रमुदित नयन देख सीय तहां भुजन भर अंकवर रसिक प्रीतमठनी । अलीवृषभानकुँवर छवि निरखहु लसत हिय जुगल अनुराग पूरनपगी ।१७७।

पधारौ सखी झूलन सरस निकुंज। जनकलली रघराज छैलसँग अमित अलिन के पुंज। शोभाधाम सिंगार जानविध रचौ हिंडोरा मंजु। अलीवृषभान झुलावत हरसत परसत जुग पदकंज। गंग जनिक जनके कल्पद्रुम सरवस सुख दुख भंज।१७८।

चलौ चल देखिये झूलन रंग। जनकलली रघुराज श्यामरौ झूलत एकईसंग। अरसपरस अंसन भुज दीनै उमगन अंग अनंग। गावत राग मलार अलीगन वाजत मधुर मृदंग। अलीवृषभान छकी दंपतिलख झोकादेत उमंग ॥ १७९ ॥

गजल ॥ सरजूपुलिन में झूलतो मजेदार यारसंग। सिया रघुराज लाल संग। झूलन झूकन जुगल जुल्म की कहीजात न मोसन। रति काम कोटन लाज हैं अखियां भई लख दंग। घन दामिनी सँग राजहिं छविसे भरे अँग अनंग। वृषभानअली सँग गई वरसे अनूपमरंग ॥ १८० ॥

फुटकर पद

किशोरीजी राख सरन मोह लीजे। दीन दयाल प्रणितहित पालक अवगुन चित्त न दीजे। तुम सम हितू नहीं जग मेरौ अर्ज कान सुन लीजे। अलीवृषभानकुँवर विनवत है अपनौ करगह लीजे ॥ १८१ ॥

करुणाकर अवधछैल मोपे मिहिर कीजे। अरज करौंश्रवन सुनौ विनय मानलीजे। अवध नगरकौ निवास चाहौं निज महल खास प्यारी चरणौंके आस पास राख लीजे। काम क्रोध प्रवल चोर सवमिल हिय करौजोर तुमविन को करैगौर अभय दान

दीजे। तवगुन महिमाअपार गाऊं हरदम समार निरखौं छवि वारवार हृदय प्रेम कीजे। अचल प्रीति जुगल नाम और आससे न काम मिथला अवध धामवास जामें अघछीजे। रसिक मंडली मेंजाउं तिनसंग तवगुनन गाऊं रसना अपनो सिराऊं जगत चाह खीजे। जनकसुता अतिदयाल मोपर हूजे कृपाल रामप्रिया सहचरी नित आनदरस भीजे॥ १८२॥

अव कृपादृष्ट कीजे निमराजकी दुलारी। तुम विन को सुनैअरज श्रवन दैहमारी। सियावरसे लागी आस और सवनतै निरास राखिये चरनौंके पास राजकुँवरि प्यारी। यह मन चंचल गमार धावत चहुँओरपास क्षिणभर नहिं लेत स्वास यैसौ विभ-चारी। तुमहौ सुखको निधान दुसह दोष समन जान सुर नर मुनयेही मान सरन गहत भारी। मोमति सुधार दीजे भव से उवारलीजे अवके निगाहकीजे वलजाउं मैं तिहारी जप जोग को न जानौं तप ज्ञान को न मानौं सियानाथ हृदय आनौ साकेत के विहारी। द्रड़भक्ति दालपाऊं सिंगार गुन सराऊं नच गायके रिझाउं पिया धनुषवानधारी। यह आसको पुजइये प्रिया सहचरी अपनइये मन भाव ज्योंहिराखिये मैं पालोहौं तिहारी॥ १८३॥

प्रीतम विन रतियां कैसे कटैं। अवधछैल दिलदारयार विन विरह विथा अवकापै कटै। हियकीपीर कासौ कहौं सजनी मदन दर्द कहौ कैसे घटै। जनकलली सुन मोरमनोरथ यह जगमें कहौ कासै सटै। रामप्रिया आशिक भई तुमपर जुगल नाम निशिजामरटै॥ १८४॥

नहिं मानै अवधपियः मेरी वरजी। नव किशोर मतलव गरजी। नितउठ रार मचावत सजानो ठाड़ौ डगर रोपैफरजी। अलीवृषभानकुँवरि कर जोरत विनय करत मानौ अरजी ॥१८५॥

सिया प्यारे की छवि मोहिय अटकी। मृदमुसक्यान लखी सखी जबसे रसिचितवन चितमें खटकी। इन समकोउ त्रिभुवन जग नाहीं किहिउपमादेउं मति भटकी। रामप्रिया वलगई लालपर लोकलाज भुवपर पटकी ॥ १८६ ॥

आज रगीले वनी छवि वांकी। वरनौं कहा अनूप रूपको देखत बुधवल थाकी। रौम रौम सुखदैन माधुरी अदभुत सिया पिय झांकी। रामप्रिया कहैं काकी दीजै इहि पटतर उपमाकी ॥ १८७ ॥

हमारीतेरीयारी नहिं अवछूटै। जो कोई विघन करै तुम हमसे तापर विघना रूठै। मनभावन सियजू अपमाई लाख अजस जग लूटै। कनानिधि हियकी पहिचानत करे विमुख मुख मूटै। करगह लियौ अलीवृषभानहिं कल प्रचंड डरटूटै ॥ १८८ ॥

देखौदेखौरी अवधपिया रोकत घाट। चलन नपावत वाल वाट। अतिहो निठुर हठ रार मचावत झकझोरत गईचनरी फाट। रामप्रिया पियारसिक सिरोमन हाव भावकरमदन ठाट ॥ १८९ ॥

अवरोको न डगर मेरी मानौ हटकी वात वनावत छल-वलकी। भरन नदेत गहलेत गगरिया रसचितबन मेरे हियमें खटकी। रामप्रिया पिया रसिक सिरोमन वान कहा परी पन-घटकी ॥ १९० ॥

कहँ नृपलाल हरनमन वारौ। जवसे दृष्टि परी वासूरत पल छिन नक टरत नहिं टारौ। रस चितवन वरवंक विलोकन वेदरदी आसिक मोहि मारौ। जुलमी जुलफ फांसि नेहिन दिल जरकस ताज अजव सिर धारौ। विहँसन असि जनु लाल म्यान से नारि विलोक कतलकरिडारौ। रामप्रिया को वेग मिलावहु सिय जीवन मनहरन हमारौ॥ १६१॥

नृपलाल मोर मन चोरौरी। चलौरी सखी मोहि वेग मिलावहु जियकी तपन निवेरौरी। रामप्रिया पिय वेग मिलावहु रूप दरस रसवोरौरी॥ १६२॥

छैल चितचोर द्रगन वसौ प्यारौरी। मृदु मुस्क्यान वंक रस चितवन नैनसैंन शरमारौरी। सिया समेत सोहत वितान में काटेकाम मदवारौरी। स्यामा स्याम सुभग सुंदर तन अति प्रवीन छवि भारौरी। नागर नवल किशोर रावरौ है नैनन को तारौरी। रामप्रिया रहिहौं इनके ढिग तन मन धन सव वारौरी॥ १६३॥

महल में कवगई ती मेरौनाहक करौ वदनाम। नहिं आवत नहिं जातन देखी कौन समय किहि ठांम। जोकउं गुर जन लोग सुनेंगे तव कैसी हूहै राम। तुमहू से पूछत आली गन कोनवरन रहि वांम। वृषभानकुँवरि जग लोग चवाई काहू नकीनी सनाम॥ १६४॥

मेरे प्यारे गरेसे लगजारे सुख सागर नृपलाल विनदेखैं मोइ कल न परतहै अधर सधारस प्याजारे। विरहु पीर दिन

दूनी बाढ़ै हियकी तपन बुझाजारे। अलीवृषभानकुँवरि मन भावन नागर रूप दिखाजारे ॥ १९५ ॥

विन दरशन तरसानी सखीरी मेरे प्यारे पीर नजानी। शील सुभाव सुनौ सियपिय को है नृपछैल गुमानी। नागर नवल सुजान सामरौ कठिन निठुरता ठानी। अवध छैल दिल-दारयार पर विनही मोल विकानी। अलीवृषभानकुँवरि मन भावन राज कुँवर रति मानी ॥ १९६ ॥

राघव मोसे नेहा लगा कितगयौरी। कँहलौ कहौं सखा रूप माधुरी कोटन काम लजागयौरी। चपल तुरंग नचावत नागर मोहनी जाल फसागयौरी। विवस भई सुद बुद नहिं तन की प्रीतम विरहा बडा गयौरी। वृषभानकुँवर चित्त चैन परैना न जानौ पिय कित गयौरी ॥ १९७ ॥

निस वासर न सुहात अनौखी जा गाड़ी लगनियां। विरह सतावत जिय घवरावत मुख नहिं आवत वात। नेहकी फांसी गरे विच गांसी जगत हसो न डरात। राजदुलारे हमहि विसारे प्यारे कठिन कियौगात। प्रनत उवारौ विरद समारौ वृषभानकुँवरि जोरै हात ॥ १९८ ॥

पिया हमसे नजरिया लगाइ जिन फेरौ। दीन दयाल रसक नृपनंदन आनद कंदन मोई तन हेरौ। वारवार प्रभु विनय करत हौंपूरन करहु मनोरथ मेरौ। अलीवृषभानकुँवरि विरहिन लखि आन करौ उरडेरौ ॥ १९९ ॥

द्रगन सर सैयां मारे गुइयां। विपन प्रमोद डरी कहरत हों संग सखी कोऊ नइयां। विकल भई लख देख हसत सब आन गही पिया वइयां। हों सकुचत कछु कहत वनत नहिं प्यारे करी लरकइयां। बृषभानकुँवर भय कर कंपत कह जावौ छैल परों पइयां ॥ २०० ॥

कहां डार आये ललन तुम मोती। हमतौ तुमको निस दिन ध्यावत और सवत हुआ कोती। जो तुमरे सवहाल रसीले कहती समताहोती। नैनन अंजन भाल महाउर आय गई को गोती। अलीवृषभानकुँवर प्रीतम छविनिरख निरख हिय जोती ॥ २०१ ॥

प्यारे तेरी छवि पर फिरत दिवानी। वंक विलोकन तिरछी चितवन हसन हिय में समानी। विन देखें नहिं चैन रैनदिन राजकुँवर रतिमानी। नागर नवल लाल सुख सागर कोट कला गुनखानी। तरस रही तेरेदरशन कौ प्रीतम पीर न जानी। अलीवृषभानकुँवर विरहन लख लाल निठुरता ठानी ॥ २०२ ॥

लालनके नैनविकट कजरारे ॥ चितवत ही घाइल करडारत मानहु मदनवान अनयारे। रतनारे प्यारे मतिवारे कोटन खंजन मीन लखवारे। जब से लगे अली द्रग मेरेछिन पल नेक टरत नहिं टारे। अलीवृषभानकुँवर मन भावन नृपसुत री दिलदार हमारे ॥ २०३ ॥

। गजल। वाछैल पर अशिक भई न परै चैनरी। लोक लाज कुलमरजाद गई विनै भूलरी। विन देखेंवासूरत जिया होत

सूलरी। देखौमगवीच खडौ नवकिशोररी। क्रीट मुकट माथे परभाल तिलकरी। लखरोमरोम वारौं कोटनअनंगरी। कानोंमें सोहमौती नासाबुलाकारी। गलसोहै गोप कंठा मोतियोंकी मालरी। भुजवाजू करकंकन चूराजराउरी। मन मुदरी उगरिनमैं वनो लख भानुलाजरी। कट कछै जरदकछनो जामा सुरंगरी। दुपटा वनौ जरतारका रूमालहातरी। वृषभानकुँवर विनय सुनौ वारवाररी। प्यारी कृपातैपाऊं मैं महल टहलरो ॥ २०४ ॥

। पद। पाईये आली सजन सुख कैसैं। छिनछिन जियरा व्याकुल घूमत चंग गगन विच जैसे। धावत फिरत दसहु दिश भ्रम वस मृगत्रष्णा जल जैसे। जैसे दीप पतंग हीय सवसुख चाहत दीपकमैसै। अलीवृषभान सिया स्वामिनि की कृपा दृष्ट सुख तैसै ॥ २०५ ॥

यह दोऊ चंद्रवसैं उरमैरें। दसरथसुत अरु जनकनंदनो अरुन कमल कर कमलन फैरैं। चंदवती सिर चमर ढुरावत चंद्र कला तनहँस हँस हेरैं। ललित भुजादियै अंस परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरैं। रामप्रिया छवि कहिन सकत अव प्रानप्रिया मुख झुक झुक हेरैं ॥ २०६ ॥

हो सियाप्यारे वांह मेरी पकरी। कहनसकी संकोच सोच वस गुरजन लाज हरी है सगरी। नृपतकिशोर सखीचितचोरन मृदु मुसक्याय गहो सिर गगरी। श्रीमिथलेसकुँवर लघु वहिनी भांनुकुँवर पियसौं नितझगरी ॥ २०७ ॥

भजौ मन रघुवंशी रघुलाल। जाकै भजन सरन रंचिक से

छूटत भव के जाल। बहुतक कुटिल अधम अप
दयाल। सब दुख हरन सकल सुखसागर कहा करै कलकाल।
लखन सहित परनाम आपकौ दीजे भक्तरगाल। अलीवृषभान-
कुँवरको स्वामिन सियाजू मोपर होहु दयाल ॥ २०८ ॥

द्रगन बसे कौशिल राजकिशोर। विपन प्रमोद गई फुल-
वारी हँस हेरै मेरी ओर। नागर नवल खड़े सरजू तट रसकन
के सिरमौर। खेलत गैंद लिये कर कमलन आनगई भुजभोर।
ठगसी रही सुद बुद बिसरी सब येसे कठिन चितचोर। अली-
वृषभानकुँवर छलछंद लालके नहिंसमुझो जियभोर ॥ २०९ ॥

ललन बिन देखैं परत परत नहिं चैंन। कहा करौं किन
जाउं मेरो सजनो भरभर आवत नैंन। हों सरजू जल भरन
जातती मारे द्रगसर पैंन। मोई घाइल करगयो सामरो कहत
बनत नहिं बैंन। वृषभानकुँवर पिय डगर लखतहौं मिलजा
राजिवनैंन ॥ २१० ॥

सुन मन रामचरन रतिमानिये। विषय विराग तजौ सब
बन सम सुख सागर जिय अनिये। जीवन प्रान भजो निसबा-
सर उनहिके गन गुन गनिये। मात पिता गुरु स्वामी सब प्रभु
सुखदायक जिय जानिये। कौसिल पाल कृपाल कल्पतरु जन
जिय प्रीति न तजिये। वृषभानकुँवर मन हठ कर रोकत नाहक
झूठ न मनिये ॥ २११ ॥

किशोरी जू कैसे याके नैना रसीले। किये कतलांम तमाम
जनकपुर मंत्रकरनबस कीले। भौंह कमान कामधनु लाजत

मोहय मांझ वसीले। अलीबृषभानकुँवर मनभावन निसदिन आय वसीले ॥ २१२ ॥

जपिहै न रामनाम जो ना सुख पाइहै। छाड़ दै गलीन चित्त रामकौ निहारलै। कोट जन्म के जे पाप दूर सब भगाइहैं। सुखकेनिधान सब दुखकेनिवार नास सरन प्रतपाल तेरेकर्म कौ छुटाइहैं। वासना उपासना की आसा सब छोड़दै नामकौ प्रभाव भयैं सकल सुक्रत जागहैं। जोग जाग जप विराग देखत कलकाल भाग जागरे विमूढ़ बात आगली बनाइहैं। बृषभान-कुँवर दिवसजाम जुगलनाम जुगलधाम प्रेम सहित लैहै तब सयवर अपनाइहैं ॥ २१३ ॥

निरख जुगल छविकी बलिजइयै। देखत बनत कहत नहिं आवत कोटन रति पति देख लजइयै। श्यामलगौर किशोर मनोहर नवल कुंज हिय मांझ बसइयै। लख लख नयन सुफल-कर आली विरहपीर सब दूर वहइयै। बृषभानकुँवर मन भावन प्यारे दिल भर दरस दिखइयै ॥ २१४ ॥

सुनौरी सखी कछु जतन करौरी। जिंहि विधिमिलै अवध नागर पिय हियकौ ताप हरौरी। बहु उपकार मानहौं सजनी राजकुँवर जब दृष्टि परौरी। ल्यावहु वेग मिलावहु छैलको खदै हृदय भरौरी। दुसह दुखकी लगन लगी अति भारी। अहौ पिया सुनिये अवधबिहारी। विरह ज्वाल में जरीजातहौं मेटहु पीर हमारी। बिन देखैं छिन कल नपरत है छलिया छैल खिलारी। अलीबृषभानकुँवर विनवतहै चरन कमल बलहारी ॥ २१५ ॥

रसिया छैल बिना मोई सब जग लागत सूना। नाहक प्रीति करी सुन सजनी कासौ कहौ यह पीर। बिन देखे वह श्यामरीमूरत पल भर परत न चैन। है कोऊ हितू मिलावै वेग वह लखनलाल के वीर। विरहिन अलीबृषभानकुँवर को वेग मिलावौरघुवीर ॥ २३६ ॥

जुलफ जाल के फंदै परौना। जो चाहौ कुसलात हियै की मृदुमुसक्याय अरौना। वेदरदी दिलदारयारसौं वसभर वाकी ओर फसौना। अलीबृषभानकुँवर कहँ सजनी नेहव्यालसे मोह हसौना ॥ २३७ ॥

हां प्यारे तेरे नन रतनारे सुनिये नृपत किशोर सियावर प्रतिमप्रान हमारे। कोटनखंजन मीन निछावर भँवर भौंर कजरारे। चितवत ही चुभजात अचानक रस हेरन मतवारे। पलकौं बीच चलत पल चंचल अति कोट मदन मदहारे। अलीबृषभानकुँवर मनभावन चित्त चोरन वलहारे ॥ २४८ ॥

कौसिलराज किशोर तुमै हम जान नहिं दैबू। बिन देखे छिन कल न परत है पीर कवन से कैबू। प्रेम लगाइ छकाय स्यामरे विरह विथा क्यों सैबू। अलीबृषभानकुँवर मनभावन विहँस अंकभर लैबू ॥ २३९ ॥

लगन तौ राम निवाहै वनहै। मैंतौ तेरी चेरी प्रीतम अगनित दोष छुड़ाहैं वनहै। मिथलापुर के नाते लालन प्रेम प्रीति सरसाहै वनहै। सुन्दर राजकिशोर सियावर रामप्रिया अपनाहै वनहै। २४० ।

मद भरीरे गजब तेरी अंखियां। भौंह कमान नैन सर वांके तकतक रे हनत मेरी छतियां। भईहौं निहाल सुरत नहिं तनकी डग भररे चलौं कैसे वटियां। बृषभानकुँवर अवकैसीकरिये नहिं परै रे चन दिनरतियां। २४१।

स्वामिनी अब जिन मोह विसारौ। ज्यौं लख दीन प्रथम अपनाई सोई वात विचारौ हौं अवखान अजान मंदमत सो तुम हृदय न धारौ। यह विनती सुन राजकिशोरी मेरौ दुःख निवारौ। अति कोमल सभाव है तुमरौ सो वह विरद समारौ। अलीबृषभानकुँवर कइ सियाजू मोह भरोस तुमारो॥ २ २॥

सरन मैंने लियौ प्रभु चरनन केरौ। इहितन और उपाय नहिं सूझत है जग माह अँधेरौ नहिं उपकार करत स्वारथहित भयौ फिरत जग चेरौ। नोचत फिरत कीट मरकट ज्यौं गिनत न सांझसवेरौ। करहुकृपाजनजान आपनो लगै न जगभटभेरौ। बृषभानकुंवर की येही विनती करौ हियमांझ वसेरौ॥ २४३॥

स्यामलियायार प्याराहै हमारे नयनौं का ताराहै। मुकटसिर जुलफघुघरारी चंद्रमुखहँसनपरवारी। नयनकी सैन अनयारी रसिक मनमोहनैंवारी। चिबुक रद अधर अरुनारे वचन मृदु ससीकिरन सोर। रामप्रिया प्रान प्रीतम सैं भई कुरवान हीतलसैं॥२४४॥

सव तज रैहौं सिया पद लागी। कृपा भई मतजागी। निस दिन टहल महल की करहौं मानौंगी वड़भागी। जग उपहास कौ कौन परेखौ सदां मिलै अनुरागी। कुल परवार त्याग सुख पैहौं जुगलप्रेम रस पागी। दीन जान राखौ अपनौ कर रामप्रिया वर मागी॥ २४५॥

द्रगन सर कोन सहै अनयारे मनमथवान सर से सालत आसिक हिय हन मारे। अवला जान कहा जोर जनावत अस नेहिनपै प्यारे रामप्रिया लागत जाकेउर निकसत नाह निकारे ॥ २२६ ॥

कौसिल राजकिशोर नजरियां कैसी है महाराज। जाहिय लगी बिकल निसवासर छूटजात कुललाज। छिनपल चैननिमिष नहिं आवत विरहताप उरसाज। मन खटकत अटकत नय नहिं सहात कछु काज। रामप्रिया आसिक कौ वस करनें ही नौवद वाज ॥ २२७ ॥

नृपलाल हमारी गली आजारे। नागर मन भावन। विरहा पीर कहौं अवकासौं विन देखे पल चैंन परत नहिं तनकी तपन बुझाजारे। अवतौ नेह कठिन भयौ प्यारे निठुर भये अब कैसे वनत है रामप्रिया सुख दैजारे ॥ २२८ ॥

अवतौ कृपा करौ राम सरन आयी तेरे। दिनजान विपत छीनकीजे निजदास चीन सवप्रकार समररथ प्रभु पाऊं कांवड़ेरे अव अवाय कीनैं सो जानत करुणानिधान अंतरजामो प्रभाव तुम से नछिपैरें। अबकी वारकरउधार तेरो बलजाऊं नाथ गावत जस निगम नाथहौ अनाथ केरे। सरस लाग हृदय प्यास चात्रिक ज्यौं रटत जाग कव मिलहै स्वांत बंदफलै आस मेरे। रामप्रिया मनहुलालसिया वरसै मेरौ काज औरन सें रहौ निरास महल वास नेरे ॥ २२९ ॥

विन दैखैं जियरा न मानै सखीरी। जवसें छैल छटा द्रग छाई तवसें चैन परत न रतीरी। अव या गैल कभी आवत नहिं वेदरदी निठुराई गईरी। कहा कहिये दिलदार कठिन है जो कीन्ही सो सीस लईरी को जानै कैसी लगन पियाकी रामप्रिया मग हेर थकीरी ॥ २३० ॥

जिय धरत न धीर प्यारे सुरत न लीन्ही। कासों सँदेसवा कहिये को लैकै जाय पियाकी नगरिआ नदेखी मन भयौहै कहिये को लैकै जाय पियाकी नगरिआ नदेखी मन भयौहै अधीन्ही। रामप्रिया मतथाको कासौं कहौं वीर वैस गई सवरी वीती पियानें गहूँ न चीन्ही ॥ २३१ ॥

ललन विन देखें रहौ न जाइ। सुंदर राज किशोर विन देखै यह माधुरी मूरत घरी पल जुगसम जाइ। नागर नवल किशोर रावरौ छिन छिन जिय अकुलाइ। हाय दरद दिन दूनो वाड़े विथा कही न जाइ। रामप्रिया अव कासौं कहिये घर अगना न सुहाइ ॥ २३२ ॥

हौंतौ शरन सियानाथके आई मिहिर कर राखना। मत मंद एती दीनहों शरन पालन हेप्रभू अवतौ कृपा कररावरे मोसै निगानहिं फेरना। श्रवन सुन विनती वडी जिनकौ कितहुँ कहुँ ठांमना। ते पाइ जग दुरलभ पदारथ रहत आनंद फूलना। नृप लाड़ले निमनंदनी प्रियासहचरी नहिं भूलना ॥ २३३ ॥

प्यारे सकल उर वासी बुध कहत प्रवीन। खोज कियौ तिन पायौ जिन लीनौ चीन। हम अवला मन कांची सब बुध

वल हीन । सवही कौं सुख दीनौं जो भये अधीन । हमरी सुरत कीनी नाही प्रीतम रसभीन । निसवासर इस तलफ़ी ज्यौं मीन । रामप्रिया सुध लीजे दरसन विन दीन ॥ २३४ ॥

राघौजीके चरनकमल सुखदैन । जाउर बसत तरत भव-सागर होत मो मंगल भौन । हरन विपत्ति मोहतमनासन जगसैं रहतसुखैन । रामप्रिया सेबहौं निसबासर आनद करन सोचैन २३५ ॥

प्यारीलागैं अवधकी गलियां । जहँ विहरत प्रीतम सिया अलियां । वनप्रमोद लागत अतिसुंदर सघन द्रुमन विकसत नवललियां । उत्तर वहत रहत सरजूजल नितनव निरखतरहत लहरियां । रामप्रिया हिय वसतसदा ही अति अनूप किया सियाकी नगरियां ॥ २३६ ॥

काकहौं सजनी प्रीतम रसवतियां । जोकछु करत नवल रसनागर कहत वनत ना करत छलघतियां । अर्धनिसो आवत द्रग आली वारवार लगावत छतियां । रामप्रिया नव छैल छवीला मानत नाह अनौखी गतियां ॥ २३७ ॥

तुमारीपियागजव गरवीली चाल । मृदु मुसक्यान तमोलन चरचन वांकेनयन विसाल । नैन कटाक्ष हेर जुवतिनपर सुन्दर अवध रसाल । चंद्र वदन लखलख पिया तेरौ विरहिन के उरसाल । वृषभानकुँवर घाइल करदीनी मारत नयन कटाल ।२३८।

चंचल नैना रतनारे हो । कोटनखंजन मीन निछावर बिन मद पियैं मतवारे हो । छविवारे कारे अनयारे कजरारे मोह लगत पियारे हो । चितवत हीमें वस कराखत हिय से टरत

न टारे हो। अलीबृषभानकुँवर के जीवन छिन पल होत न न्यारे हो ॥ २३९ ॥

कहियौ हो प्यारे सैयांसें हमरौ सदेसौ कहियौ जाय। घरी पल छिन मोह कल न परत है तलफत रैनबिताय। कहा कहौं कछु वस नहिं मेरौ तुमविन जियघवराय। अलीवृषभान-कुँवर करजोरै लीजौ निकट बुलाय ॥ २४० ॥

मधुरछवि नैननसें न टरैरी। पलभर कल न परैरी। कौ-शिलपाल कृपाल रसिक निध सरजूतट विहरैरी। कुंडल श्रवल मुकट माथेपर करधनुवान धरैरी। अलक झलक दुति गोल कपोलन बोलन अमृत झरैरी। सीतल मृदु मुसक्यान मनोहर तनकी तपन हरैरी। रामप्रिया सियावरको मूरत निसदिन हृदय भरैरी ॥ २४१ ॥

प्रीतम छवि प्यासे नैनारे। चाटपरी द्रग श्यामरी सूरत विन देखै नहिं चैनारे। निस वासरहमको तरसावत मोहे सौतन के वैनारे। रामप्रिया प्यारी जश मानौं वालम वेग मिलानारे ॥ २४२ ॥

आली मन मोह लियौ चितचोर। हँस हँस मोतन सैंन चलावत नागर नवल किशौर। बंक बिलोक नैन शर बाके बिवस भयौ मनमोर। सुंदर श्याम कमलदल लोचन वारौं काम करोर। रामप्रिया मिल है सिया बल्लभ करहु कृपा को कोर।२३३।

क्यौंतरसावत छैल चिकनियां अजव अदा दरसाइ लुभाई। निठुर भये अव मनके हरनियां। हाड़दई विरहानल वाड़ी

निरमोही सै लागी लगनियां। रामप्रिया दरसन विन तरसत सवके हौ राजा हमारे हौ रिनियां ॥ २४४ ॥

छलन छली सजनी छलिया छैल। विपनप्रमोद गई ओलीरी वीचखडौ रोकैगैल। मैं जिय भोरी कछुय न जानी वा रसिया के फैल। रामप्रिया अवधेश ललनसंग सव तज करहौं मेल ॥ २४५ ॥

अजव गत तेरी प्रान प्यारे। अतिअनकूल विदित सवही कौ भल लच्छन मतधारे। पावन प्रीति रीत दरसावत भावत भाव निरारे। भन वृषभानकुँवर अवसर यह जान परे गुन सारे ॥ २४६ ॥

नवनागर वड़भाव विलोकौं सिय गुनरूपनिधान। अंग अंग अभिराम अधिक अति रंग रंग दुति भान। नीलनि चोल अमोल अमल मधि गौरगात छविधाम। मनु मरकत वितान मंजुलमधि जाग्रत जोत ललाम। मांगसरस सिंदूर सहित सुठ कच पाटी विच तीक। देवसरित सारद रविजा मनु मोदित चंदन जीक। मुक्तालर लटकत विशालवर तिहिं चल रूप निकेत। उड़गन सिमिट एकहू करु मनु चलित मिलिति ससि-हेत। अर्धचंद्रवत भाल पटल थल वैंदीलालअनूप। मनु वंदक पुष्प लहि ससि किय पूजित मनसिज भूप। आड़ तरलताटंक भृकुटवरससिरथ अंग समान। मनु द्रगमृगनिसुतिलक वाग धरि-सारथ मदन अमान। नासकाग्र मुक्ता विसाल अति सोभा कहत वनै न। दाडिम चषत वीज लाग्यौ जनु कीर तुंड छवि एन।

चक्रन कलित कपोल गोलअति दर्पनसे दुतिसार। संमत करत बंधुगनि ससिसौं मानुष संख उदार। अद्भुत अधर सुधारस रंजित समरद अतीअमंद। मनु छविछीप रूपसागरभव जुत मुक्ता वरबृंद। कटसरिया कल ककिकंठ दुति कठ कांति कमनीय। मनहु गंग मूरत अभंगतट रुचिरेखा रमनीय। जलजहार परितच वक्षथल शोभा स्वछ उदार। मनु गिरमेरु परसि सुरधन धसि धरनि धवल जलधार। पहुँची परम पानिपंकज तट शोभा अधिक अलेख। मनहु सुकृत जसथान जानिकियदान द्रव्य परवेष। चित्रत तव बिचित्र बाजूबंद चित्र फुंदनाजाल। मानहु मदन वटित रसरीधे खुलत झुकत सिखिवाल। सोमुनि सूत्रि अचित कंचुकि रुचि संचितकछुदुत स्यांम। मनु बैठे मनसिजके डर हर ओड वर्घवर वांम। रोमावली मृदु मंजु सोयकी शोभा वरन न जाइ। मदन अहेर मनहु नाभी रुहि सांधिवसांगवनाय। हरि कटितें कटछीन कलित तटि कुनित मेखला जाल। मनु मनसिज नितंव तुंवीधरि साजित सुरजसमाल। रंभा तरु विपरीति रंम्य सम जंघा जुगल विराज। लहँगा ललित वलित साजित मन मदननसतमदराज। येडदार उद्दित उदारअतिगरवीली गतिमंद। मनहुमानगडमैंड़ मिटनहित चालित कामगयंद। पंकज वदन संख नूपुर धुन पाटफुंदना परम। करत मधुर गुंजारअलिनमन छवि रतियायसघर्म। कोमल अति अमंद एडी समनारंगी जनजोय। पदजावक अनुराग जगन जन लागत सव सनकोय। सुरबंदित नखचंद्र चारु नर भनशोभा तहँ कौन।

जनुनक्षत्रमाला पाइनपर भवचाहत दुतिभौंन । अलीवृषभानकुँवर भावतमन वरमायत मृदुवैंन । रसिकराज रघुवीर सहित वसु सियस्वामिन हियएंन ॥ २४७ ॥

मनलैगयौ हमारौ पिया स्यामरौ । लख दिल भयौ मेरो घावरौ अतिसुखमार चतुरनागरनट नवकिशोर छवि आगरौ । कोटकाम अभिराम मनोहर को ना होय लख वावरौ । रामप्रिया प्रीतम मनभावन सवतज मिलौं उजागरौ ॥ २४८ ॥

नहिंहैं तुमरीप्रथम कैसी बतियां । हम बरजी जमतौ नहिं मानी अबकैसी भई पियातेरी मतियां । नेह लगाइ जान जिय मोरी फिर पाछै कोनी तुम छल घतियां । कहत और कछुकरत औरहौ नहिंवड़वत अनुहर कुल जतियां । वृषभानकुँवर की बिगरी बिसारौ करुणासिंधु गहौमेरी बहियां ॥ २४९ ॥

पिया तेरी जुलफिया नें जादूकिया । चंद्र वदन छूटो अलवेली गोल कपोलन झलक दिया । भौंहकमान नैंनसर वांके चंचल चित्त मनमोहिलिया । गजगत चलत हँसत चित चोरतवैसकिशोर भुलायलिया । अलीवृषभानकुँवर बिरहिन लख मनमथ जोर जनाइ दिया ॥ २५० ॥

सखीरी भोय वैरिन नींद भई । सपनै बालम मोढिग आये मृदु मुसक्यायगई । चौकपरी प्रीतमनहिं देखे मनकी मनहिंरई । बिरहबिथा बाड़ी तवहीतैं लागी लगन नई । रामप्रिया सहचर मनभावन क्यौंन जगाय लई ॥ २५१ ॥

ठग लैहै नृपतसुत मानकही । वामारग मत जाउ मृगनैंनी

द्रगन बीच धसजैहै सही। जासैं लगत बिकलकरराखत मतवारे की बान यही। रामप्रिया सहचर सुन सजनो जोजानै जापैवीत-गई ॥ २५२ ॥

पिया प्यारे हँसन लख पागीरे। सुंदर नवलकिशोर सिया-बर प्रीतमरसअनुरागीरे। जबसैं दृष्टिपरी वहमूरत कान मान कुल त्यागीरे। दिननहिंचैन रातिनहीं निद्रा बिरह पीर उरजागीरे। अलीबृषभानकुँवर नागरबर मिलनचोट जिय लागीरे ॥ २५३ ॥

बहुत दिननकी यारी हमारी तेरी। कैसै पधारे आज रंगीले सुरत करी बहुभारी। अब जिनजावहु अवधस्यामरे मम हिय कुंज तिहारी। रामप्रियाकी येही बिनती पलछिन करौ न न्यारी। हाहाकरत हौं पैयां परतहौं यह बिनती अवध बिहारी ॥ २५४ ॥

। रेखता। अजब खूब सूरतीवारा। सिया स्वामिनका प्या-राहै। झुकीली ताज जरकसकी जुलफ जुलमी रसीलेकी भौंय धनु बानद्रिगचितवन जरामोतन निहाराहै। जान कुरबान प्यारे पर दिलौं से दोस्ती द्रढकर जगत उपहासका क्या डर यही जीवनहमाराहै। लखौ सखी माधुरीमूरत नही त्रैलोक अस सूरत जुगलपदकंज नितध्यावै रामप्रिया नयन ताराहै ॥ २५५ ॥

कारन कबन मान तुम कीनौं। कौशिलराजकिशोर श्यामरे नाहक मोह बिरहादुखदीनौं। जोकछू चूक परी सोसमारौ सिया नातेसे चीनौं। अबकाहेको गहत निठुरता बिरहदाह दिन दूनौं। सुन बिनती बृषभानकुँवरकी लखहँसकर गहलीनौं ॥ २५६ ॥

सियाबरप्यारे अवधपतिबारे दरस टुकमोह को दिखाजारे।

मुकुट सिरधारी जुलफ घुघरारी तनक हँसकै बतराजारे। नयन रतनारेभँवर कजरारे रसिक लख जियराजुढ़ाजारे। बृषभानअली तुय सरनलयौ मोह जुगल चरनोंमें बसाजारे ॥ २५७ ॥

करत अब काहेकौ निठुराई। तेरी बारबार बलिजाई। तेरे ही रूप लुभानी छबीले दरसनबिनधबराई। कौसिलराजकिशोर सियाबर मिलौ बेग पिया आई। पल छिन चैन परत नहिं प्रीतम बिरह पीर सरसाई। अलीबृषभानकुँवर मनभावन तुम बिनकछू न सुहाई ॥ २५८ ॥

जनलखरूप लुभानीरे। कुलकान जानमैंदईवार बिनदरसन दीवानीरे। दिननहींचैंन रैंन नहिं निद्रा कहा करौं जिय मानत नाही अवध छैलदिलदार यार दिल पीर न जानीरे। निठुर भयै अब बनत न प्रीतम बिरहा जोर मेरे दिलके अंदर अलीबृषभान-कुँवर आसिक पिया हाथ बिकानीरे ॥ २५९ ॥

मैं खडी महल अपनेंरी। मग निकसौ राजकिशोर लियौ चितचोरी। बाकौ सुंदर स्याम स्वरुप मदन मदहारी। मुख लख लाजह कोट ससी बलिहारी। बाके बड़ेबड़े नयन बिशाल जुलुफ घुंघरारी हँस हेरे मेरी ओर दसन छबि प्यारी। द्रग छायौ स्यामल छैल करौं का आली। नहीं परत चैंन दिनरैंन बिरह बेहाली। मैं कासौं कहौं यह पीर हृदय की गाड़ी। प्यारौ बिन देखैं नृप लाल दरसहिय बाड़ी। एकअरज करौं करजोर सुनौ प्रभु मेरी। बृषमानकुँवर को करौ चरनकी चेरी ॥ २६० ॥

पद ॥ नागरनवल नयनबिच अटके । अँग अँग कोट काम छबि निंदित सुंदर केहर कटके । नखसिख सुंदरता किशोर दोऊ उपमा देत कबीजन भटके । चितबत चित हरलेत पुरजनकौ चेटक मानौ नटके । अलीबृषभानकुँवर बाछबिपर अटके मानत नहि मनहटके ॥ २६१ ॥

पिया प्यारी कौ मन सो मयूर पिया घनस्याम सघन । देखत नभ सुख होत मोद उर नाचत प्रेम प्रमोद हेर आनंद मगन । मन भावन विहँसन दामिन सम अधर इंद्रधनु तूल सुहाई दसन चमन । रामप्रिया दादुर सहचर गन चात्रिक पंकज नैन स्वात छबि बूंद चखन ॥ २६२ ॥

जहां देखौ तहां राम मईहै । नभ थल गगग पवन चारौ-दिश राम अंश सें सिद्ध लईहै । जड़ चैतन थावर जगममें देख परत सबमें विजईहै । देव दनुज किंनर सुरनरमुन पुरपारथ सब आप दईहै । रवि निसपति तारागन संजुत्त रा मकारसें जोत भईहै । वेद पुरान कल्प जुग निसदिन काल निमिख जिनकी रचईहै । सिद्ध सरित सर जहांलग रचना चित्रविचित्र देखत सदईहै । रामप्रिया उरअंतर वासी सियावल्लभ अनुराग सईहै ॥ २६३ ॥

सुनौ प्रभुछाड़ै नाहि बनैं शरनागत पालै बनैं । हौं अघखान अजान मंदमत कलमल रहत सनैं । अबकीवार निहार कृपाकर दीनन दीन गनैं । अधमउधारन जग यश पावन मैं निज श्रवन सुनैं । समरथ सब लाइक गुणगाहिक बेदन सुयश भनैं । सब-आशा तज रहौं द्वारपर डगौं न प्रण अपनैं । रामप्रिया करुणा गुण आगर बांधिचरन द्रड़ मनैं ॥ २६४ ॥

काकरौं सजनी द्रगन छबि अटकी। क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडिल अलक नागनी मुखपर लटकी। बंक बिलोकन तिरछी चितवन मृदु मुसक्यान हृदय बिच खटकी। फूल छड़ी फेरत कर कमलन सिंह ठवन नवराजकुवरकी। रामप्रिया पल छिन न बिसरत वारौं छबि लख कोट मदनकी ॥ २६५ ॥

लला तन मन जिया तुम पै दैऊं वार। तेरी रस चितवन मनहरन यार। जबसैं लखी बसीउर अंतर मदन पीर दई हृदय फार। रामप्रिया पिया रसिक सिरोमन सदा रहौ मम हियके हार ॥ २६६ ॥

मिथिला निजधाम सिय प्यारीकौ सुखदाई। नौऊनिध अष्ट सिद्ध रहततहुँलुभाई। कमलातट पावन सखी बिरहतनित अलिन संग सारद लख रहतमौन सकस नांह गाई। चिद बिलास सुख निवास ऐकै ही रस सर्व काल काम क्रोध लोभ मोह कतहुं ना दिखाई। चहूंओर बनअनूप कंचनमय सिद्ध रूप जन्म सुफल करन हेत पटरित रहिछाई। ब्रह्मा शिव सुथलजान बिष्णु संगमें जुआन तिरहुत तातैं कहाय कीनयज्ञआई। विघ्न रहित सिद्ध सहित कीन्हैं मुनबर निवास जोजो मनभावत सोपावत अवाई। बारबार विश्व मनाऊं एहीपुर जन्मपाऊं सीता जुगचरन ध्याऊं मन रामप्रिया भाई ॥ २६७ ॥

रैन श्रमथाकैरी लली ललना। श्यामा श्याम ललित जोरी सुभ अंग अनंगन छाकेरी। कजरारे अरुनारेनैना बोलत मुख मधुर बैंन प्रेम उमग जागेरी। रामप्रिया दंपत शोभा लख मोद्रग पागेरी ॥ २६८ ॥

अखियाँ जुगलरूप छबिछांकी। गज गत चलत हँसत चित्त चोरत राजकुँवर छबिबांकी। हावभाव रसिकेलकला लख कोटन रतिपति थाकी। वृषभानअली दिलदार अदानब हियके अन्दर राखी ॥ २६९ ॥

देखके छबि माधुरी नवनागरमें द्रगलगे। सीसपै सखी ताजजरकस जुलफ लख नागिन लजैं। डसती हैं आशकौंकेमन कौं मैरसैं फिर नही जगे। छाकी हौं बछैल पै नहि रैनदिन निद्रा लगे। कैसैं मिलै दिलदार बांका आयकै गरुआलगे। छूड़िये कहँ जायकैं नहि जनत तौ येकौ वनैं। बिरहको तौ पीरबाड़ी दरद दिलका को सुनैं। इस रोग की औषध दवा नहिं जंतमंत्रनसै बनैं। वृषभानकुँवर रावरे मोरे औगुनौंकौ मत गनैं ॥ २७० ॥

गजल

नरदेह कौ तन पायकै भजनाम को हरदं। शिवमन मानस मराल बिहरत हरदं। श्यामलकिशोर सिया संगमें हरदं। छबि सोहना छबीला सुखसारकौ हरदं। करुणानिधान भक्तवतसल पासमें हरदं। वृषभानअली जुगल ध्यान ध्याबधु हरदं। सिया नृपतलाल महल टहल देंहगे हरदं ॥ २७१ ॥

सिया स्वामनी कृपाल राख लीनी हमकौं। काटी अनेक बिघनैं गह लीनौ करकौं। लख परकर अपनीमें अभय कीनी हमकौ। दीनौं अनेक सुःखन भीनौं अनंदकौ। खासी खबासी पदबी दुर्लभ सुनीदंको। बरदीजे करुणाकर नहिं भूलौं तुमकौं।

निस दिन बिलोकौं जुगल चंद्र चात्रक मनकौं। वृषभानअली भली बात नामहै सबकौं। छबि माधुरी निहार करौं पावन तनकौं ॥ २७२ ॥

चित्रकोट के

बन बीथन राम चलेआवैं। पाछै अनुज बिच सिया राजै सोसजटा करधनुषबिराजै कटि सरतून कसैंआवैं। शोभा सीलधाम सुखमाके कोठनकाम लख सकुचावैं। रामप्रिया देखौं बड़भागिन ग्रामबधू लख ठगजावैं ॥ २७३ ॥

चित्रकोट अति बिचित्र देखौ द्रगसजनी। कामद्रुमन कल पवृत्त अभिमत फल दैवी। चहूँओर बनअनूप पछिम दिस भरत कूप जाकी महिमा अनूप जातनाहिबरनी। तापस मुनि सिद्ध बसत जुगल नाम अमित जपत तिनहिं देख कबुष नसत त्रैताप भंजनी। मंदाकिनी गंमाधार पैसरनी सँग बिहार मंजत सुकृती सुज्ञान दुखदरिद्रनासनी। श्रद्धा संबल से हीन ल्याई सिया दीन चीन रामप्रिया चरनकमल निकटबासनी। २७४ ॥

चितचेत चतुर चित्रकूटचलौ। सुखकौधाम प्रियाप्रीतमकरैं बिहार निसजाम भलौ। चरनचित रजनैन लगावहु नामजपौ त्रैताप दलौ। रामप्रिया सब भांत भरोसौ सुकृतबिटप सब भांत फलौ ॥ २७५ ॥

चितचोर लीन चित्रकूट रहसभूम जानी। बिहरत रघुबीर संग जनक सुता अतिउमंग बिहँसत पियाबदन निरख शोभा

सुख खानी। रामप्रिया जहँ बसत षटऋत सुभ मोद लसत बीनालैकरत गान सादर सुखदानी। अरसपरस हावभाव प्यारी-पियकौ सुहात रामप्रियाछबिनिहार धन्नभाग मानी ॥ २७६ ॥

पद सैन

प्रीतम चलौ सिजिरियाँ रैन रथ थोरी। नवललाल नवसेज रगीली नवनागर सियागोरी। शिथिलगात अलिस्यात प्रानप्रिया श्रीनिमराजकिशोरी। सुनि अलि वचन चितैं प्यारीतन उठभुज अंस गहौरी। दोऊ मन उमंग चली रस सरता अलि हिय सिंधु भरौरी। रामपियायह आनंद अलौकिक सोवड़भाग लखौरी ॥ २७७ ॥

उमंगआई निदिया चलौ सिजियापै। सैन भवन दंपत सुखलीज जामिन अधरतियापै। चंन्द्रवदन गह उठी पियाकर अरुनाई अखियांपै। रामप्रिया सिया संगमें लीनो सैंनदई सखि-यांपै ॥ २७८ ॥

रहस

बिरचो रहस कुंज सरजू तट। श्रीमिथलेशकिशोरी मानतज कौशिलराज किशोर करतहठ। निरतत सोम श्रवन सुखदाइक डगत न लाल बड़े नागरनट। मानजोय अबलान करत सुख जैसौ प्रगटभयौ सुरतरुवट। बृषभानअली लख लटकमुकटको जाह गहौ सुन्दरपीरौपट ॥ २७९ ॥

जुगलकिशोर ये शुभ सरदआई रहसरचिये। गगन निरमल उदय शशिषोड़सकलाजुत प्रेमरसरँग बोरिये। रुचिजान रचौ

बितान अलिपन फरस तकिया सुभ्रसोभत जुगल सिंहासन मनोहर मनिन दीपक जोरिये। नब सत सिंगारी प्रिया प्रीतम निरख छबि द्रंग हृदय सीतल जावबलबल सदां तुम्पर बसत हौं द्रग चोरये। आनंद मंडिल रहस मनलख मोद उपजत नचत थेई थेई। बजतनूपुर सुरसमारत गत वनावत मोरये। बीनाबजावत लै सिया सांगीत नाचत हर्ष पिया अतिचातुरी गत जानके हँसि हेर लोचनकोरये। भुज कंठ मेलत पिया निहोरत नाचिये सँग हाथ जोरत बिहँस लागी मोदहियसैं निरख छबि त्रणतोरये। नव भाव हांस बिनोद देखत रामप्रिया लख बिहँस मांगत बसौमोहिय श्यामश्यामा सदां एकहि ठौरए॥ २८०॥

पद

पियामुख देखत सरद शशि लाजै। पूरण कलाकर आजौ। किहि उपमा दैउं पटतर नाहीं नागर सबसुख साजै। बिचरत नग मग सेज सदनबिच अधरामृत रस प्याजै। रामप्रिया प्यारी मम जीवन उदैभयौ रतिसुखकाजै॥ २८१॥

रेखता

रसरास रचौ प्यारे उपबनमें आयकैं। पयसिंधु अवध छाड़कैं कामद में ल्यायकै। चहुंओर लताछाई गंगानजीकमें सहचरी गन गावैं अनदबडायकैं। नग नाग देब किंनरीं देखैं सिहायकैं। बाड़ैसुहाग सियकौ कहैं बिध मनायकैं। नाचनलगी बहुप्रमदा सिया रुचकौ पायकैं। द्रगकरकटाच्छ प्यारी पियकौ रिझायकैं। रामप्रिया मागैं जुग चरन लागकैं। नितगौरश्याम बसौ हृदय रसबिहारकैं॥ २८२॥

पद

देखो सुघर श्याम रसिक बंसी मुख साजैंरी। सरद सुहाई जीन्ह मन्दमन्द चलैपौन देख चंद्रबिम्ब हियैं उमग हर्ष एरी। नवल लाल संगबाल दंपति रस में खुसाल शोभा लख भईनिहाल अंसन भुज धारैंरी। मन्दाकिन नीरसींच कामदगिर ललनबीच सिंहासन रतनजटत छत्रचमर छाजैंरी। भूपततनया समेत राजत रघुबंशकेत रामप्रियामधुरीधुन सप्त सुरन बाजैरी॥ २८३॥

बीन कहूँ बाजी रघुबरलालकी। सप्तसुरन लै रसभर गाई श्रवन सुनत मनथाकी। संगचलौ द्रग लाभ दिवायौं रास मंडलकी झांकी। रामप्रिया सिया मिले पदारथ फिर न रही जग बांकी॥ २८४॥

चलौपिया कनक कुंजकी ओर। छबिआगर नागर सुन्दरबर रसकनके सिरमौर। रहसचाह प्यारीउर लखकैं आई तुमहि निहोर। चलियेबेग बिलंब न कीजे करिए रासबहोर। पियातन श्याम सियातनगोरी घनदामिन छबिजोर। अलीबृषभानकी येही बिनती ममहियबसौ चितचोर॥ २८५॥

बजावै बीना नागरीहो। बीनबजावैं पियाकौरिझावै नैनन भाव दिखावैं हस्तकमलकी चलन अनूपमरूप अमित गुनआगरीहो। साद बजावैं सुरनसमारें अद्भुतगति सरसावैंहो। रसिक प्रीतम की प्रानप्यारी मधुर सुरनगावैं रागरीहो। बलबलजाव कहत मनभावन हसकै हृदय लगावैंहो। रामप्रिया सहचरी यह सुख कौं निरखै सो बड़भागरीहो॥ २८६॥

ताकौ प्यारी सरदरित चांदनी। लालन मदनकेल कल नागर सिया सुंदर गजगामिनी। सुधारूप ससि दीसत निरमल कामिन कामजगावनी। बिपन सिंगार बिच कुंजमनिन मय रबकिरन लजावनी। करिये रहस आज प्रियप्रीतम नैनन सुख बरसावनी। नव सत साज सिंगार चली सब रतमद कोट लजावनी। बाजत ताल मृदंग बीन सुर राग सरस उपजावनी। निरतत गत उघटत कर थेई थेई नूपुर मृदु छमिकावनी। बृषभानकुँवर हिय बिमल कुंजकर बसौ पिया सिया स्वामनी। २८७।

देखौ प्यारी सरद शशि नीकौ। सरदशशीसम बदन तुमारौ सरदशशी लगै फीकौ। मोद्रग सदन गगनहिय बिचरत मन भावै मुख सीकौ। निरखतरहत चैन जिय आवत नवछबि पान अमीकौ। जीवनघन सरबस सुखखानी प्रानपिया तुम जीकौ बृषभानअली नृपलली विहँसकर असिधारौ भुज गीकौ॥ २८८॥

ठुमरी

सजन मोसै बरजोरी कीनोरै। मोईको आय अचानकरोकी। मृदु मुसक्याय पिया चोली तरकाई। कछुइतनी ढीटई मेरी बिनहु नमानी। अवधबिहारी तेरी जानी चतुराई अवछु औ न कलाई रामप्रिया दिलजानी॥ २८९॥

मेरी रोकौ न डगर अवधेशललन। रसिकप्रीतम मेरी मानिये अरज सास सुनैगी रारकरैगी ननद सुनैघर बात चलन। यह सुन हँसे रसिक नागरवर रामप्रिया आनंदभरन॥ २९०॥

चलत डगर मत छेड़ो छैल। बिनय करत मत रोकौ गैल। तुमतो निडर मोह भयौ भेल। रामप्रिया मोतै करौ न फैल।२९१।

भोरई रारमचाबैरी। मेरी रैंन उनोदी अखियाँ बरबस गरुआ लगाबैरी। बेदरदी बरजी नहि मानत रसभरी बात बनाबैरी। रामप्रियाप्रीतप रस लंपट मीठी तान सुनाबैरी ॥ २९२ ॥

रघुनंदन छैल हमारारे। लगै तेरौ मधुरबचन मोह प्यारारे। जबसैं दृष्टिपरी बासूरत रुकतनहीं मनमेरारे। मनभावन तुयन-यनकंजसम सैंन पैंन शर मारारे। तुमबिन मेरेंचितचैंन परत नहिं छिनपल होत न न्यारारे। रामप्रिया छबि बिलख छकी चरन कमल बलिहारारे ॥ २९३ ॥

गजलैं

महबूब भूप प्यारा मनमें समारहाहै। खूबसूरतीका प्याला चशमौंसे पान कराहैं दिल पै असर गयाहै। जबसें भई दिवानी वा जानसें लुभानी अबतौ कठिन भयाहै। आशिक बलाय लागी माशूक रूपपागी पलचैंन न लहाहै। किस्से कहौं कहानी प्रिया सहचरी भुलानी घाइल पडा रहाहै ॥ २९४ ॥

माशूक रूप प्याला चशमौं से पान कराहै। तिरछी नजर का मारा बेहोशदिल हमारा जब से निगापराहै। नब वैश हुसन बारा हियसै टरै न टारा छबि सिंधुका भराहै। बलजाउं जानवारी प्रियासहचरी तिहारी अबतौ शरण धराहै ॥ २९५ ॥

सखी रघुराज मेरे दिलका प्यारा है। कभी नहिं होत है घरीपल छिन को न्यारा है। सखी बह छैलकी हेरन करूं क्या उसकी छबिबरनन हँसन हियमें बसी जबसैं नहीं दिलको सँभारा है। लगी अबनैनकी गांसी छुटै नप्रेमकीफांसी करौं क्या बस नहीं

मेरा कठिन बिरहानेजाराहै। अलीबृषभानकुँवरकी रहै नितचाह मिलनैकी दरस दीजे कृपा करकैं तुही जीवन हमारा है ॥ २९६ ॥

रघुराजसें करदोस्ती सब सुख कौ सारहै। सुंदरकिशोर जांनकी जीवन सो यारहै। तप दान तीरथ कोटन सबभँवर जाल है। भवसिंधु दुस्तर तारबौ सिया चरनौं नवारहै। करुणानिधान सीञ्चता अदभुत अपारहै। बृषभानअली जुगल छबि निस दिन निहारहै ॥ २९७ ॥

सियाबर सलौनें बनै कैसे कैसे। बसे चशम अंदर रमै कैसे कैसे। मिलेथे चिमनमें द्रग नसेमें ताके अधिकछबि लाज फसे कैसे कैसे। लसैं सिरताज जुलफ घुंवरारी अलकनागनीनेंडसे कैसे कैसे। भौह बरबंक कमानतनी रसचितवन बान गसे कैसे कसे। मकराकृत लोल कपोल लसैं दुति कांति मयंक प्रभा कैसे कैसे। नासासुक भालविशाल लसै अधरामृत पान रचे कैसे कैसे। जबस धन धाम सुहात नहीं प्रिया सहचरी अंक भरै कैसे कैसे ॥ २९८ ॥

दिलौ मनजानसे पाया सजन कुरबान भई। छबीला छैल लख आसिक भई बदनाम नई। महिर महबूबकी हरदम निहारूं समारूं माधुरी मुसक्यान मजेदार दई। सदा छकीरहूं दिलबरकी अदामें हुआ दिलमस्त बेपरवाह जब वांह गई। नृपत मन भाव तौ प्रिया सहचरी कौ सिया सुखदैन दीनानाथ अपनायलई।२९९।

मिलादे सही श्रीअवधेश का प्यारा लला मिलादे सही बहुत मानौगी तेरा भला। सनादे जायकै अरजी हमारी कहौ कब दैंइगे छबिका भला। सजनी चैन निस दिनमें परै न तलफ रहे नैन नहीं

लागैपला। अलीबृषभानकौ दिलभर दिखादे लगादे भावतौ मेरेगला॥ ३०० ॥

आली दिलदारकी सुकुमारता दिल छारईहै। लखी जबसैं भई मैंबावरी सुदबुद गईहै। भ्रकुटबरबंक है चितवन में टौना लगे सर नयनके घाइल भईहै। बिकी बिनदाम मैं प्यारेकी छविपै भई आधीन हौं आसिक नईहै। अलीप्रिया सहचरी कुरबान पियापै सिया मुखचंद्र लख आनँद भईहै॥ ३०१ ॥

रघुराजसै कर दोस्ती दिल लाग है कै न लागहै। मुख चंद्र जुग कौ चकोर चित कर चाहिहै कै नचाहिहै। सिरताज जुलफन फंद में दिल फांस है कै न फांसहै। द्रगकंज खंजनसे बिलोकन लागिहै कै न लागिहैं। छबि माधुरी अवलोक कै सुखपाय है कै न पाहिहै। राम यश दृढ़ प्रीतिकर मुख गाहिहै कै न गाहहै। कानन कथा रसरास की सन भायहै कै नभायहै। शुभ अशुभ जग की बासना मन छाड़िहै क नछाड़िहैं। सुख दुख नफा जग हानिका भय त्यागिहै कै न त्यागिहै। सत संग रसकन की सभाको धायहै कि न धायहै। पिया सहचरी जुग चरन रज हिय धारहै कै न धारहै। जो लागहैं सिया जू शरन सुख पाईहैं फिर पाईहैं।३०२।

जिन राम यश गाया नहीं कोबिद भया तौ क्याहुवा। जुग चंद्रछबि छाकी नहीं अनुरागरस चाखा नहीं जप जोग कर छापा दिया माला लिया तो क्याहुवा। सुख सिंधु में बूड़ा नहीं सतसंग को करता फिरा सियानाथ को जाना नहीं महली हुआ तौ क्या हुआ। दुनियां में आके क्या किया औवलफजल बकता फिरा

कोपीनकट करवालिया धूनीतपा तौ क्याहुआ। बृषभानअली स्वामिनी चरनौं का आश्रय न लिया मखदान फल चाता फिरा ज्ञानी हुआ तौ क्याहुआ ॥३०३॥

रघुराज मानप्यारा सजनीमुझे मिलादे। बिरहामें दिल तलफता द्रगदरस अब दिखादे। छबि माधुरी निहारी कुरवान जान सारी कब अबध बिहारी तनकी तपन बुझादे। अब सुरत कौ भुलाते बेदरद क्योंकहाते सबयाद हैं वे बातैं इतनी अरज सुनादे। नहि भूलती भुलाई चशमौंमें रही छाई बृषभानअली दिलवर अब तौ गले लगादे ॥३०४॥

अरे दिलदार दिल हरकै भला तरसाव मत हमको। करी दिलदोस्ती तुमसैं निठुर अबक्या भये हमसै। अहो नृपलाल बेदरदो मिलन की क्या गईफरदी। तुझे कछु लाज नेहाकी मेरी बदनाम बेहाकी। जगत उपहास क्यौं सहिये बिरह की पीरसौ मरिये। तुझे मेरी फिकर नाई कठिन दिलके भये साईं। करौ जिन देर अब प्यारे द्रगन से करिये मत न्यारे। अरज यक मानिये मेरी जुगल चरनौं की हौं चेरी। दीजे दरसन मिहिर करना अलीवृषभानकुँवर सरना ॥३०५॥

अरी नृपलाल बेदरदी मुझे द्रगबान से बेदी। लखीछबि छैल की बांकी नहीं सुध मोह तनमनकी। नहीं अब चैन दिन रतियां बिनामिले यारकी छतियां। भई दिलतैं दिमानी जब करौं क्या बावरी सुन अब। मिलादे श्याम प्यारे कौ जिलादे जी समारे को। दिखादे आयनैंनन सैं सुनादे बचन श्रवनन सैं। मिलादे

आय छातीसौं मिटादेताप तन मन सौं। अरी जश कभी नहीं भूलौं जिगर मैं जिन्दगी तौलौं। बिरह की पीर अतिबांकी अलीबृषभानकुँवर थाकी ॥ ३०६॥

प्रभाती

प्रात जगे लली लाल नयना अनुराग लाल देखत नभ लाल प्रेम जागे मतवारे। जावक सें चरन लाल मेंहदी सें करन लाल बीरी से अधर लाल मदन कोट वारे। नवल लाल बाल साथ सोहत गल माल लाल जोवत मुख लाल अली लोचनकेतारे। रामप्रिया लख निहाल लागत सोभाबिसाल सेजसदन मनिन लाल मगन मन हमारे ॥३०७॥

दियैं गलबैयां दौनौं जनैं रैंन रहसरस रंगसनैं। सैंन भवन परजंक अंकभर अद्भुत छवि कब कोन गनैं। मदन समर श्रम मधुर बचन कहि प्रानप्रिया सिया प्रेम ठनैं। रामप्रिया सब भाँत बिहारी अवध छैल अपनायैं बनैं ॥३०८॥

दादरे

अवध पिया काय तरसावै जियारे। हमरी लाग रही सुद तुमसौं सयननहरत हियारे। घरी पल छिन मोह कलनपरत है तनमन बिबस कियारे। अलीबृषभानकुँवर जीवन धन ऐसे तुम छलियारे ॥३०९॥

बाछवि पै कहौ को न लुभानौं सवतज भयौ मन बावरौ। घरके कहत दिमानी डोलत मोद्रगवसौ पिया श्यामरौ। सदा लगन महबूबदरश की क्यौं नहिं मिलत उजागरौ। छिन नहिं

चैन लहत मनमाही बरबस भयौ जिया घाबरौ। कहिये पीरसुनै को सजनी जानत नहिं सुखसागरौ। रामप्रिया चाहत निसबासर जुगल चरन मन भावरौ ॥३१०॥

बिन देखैं स्यामलिया रहौ न जाय। घरी पल छिन मोह कल न परत है परबसभई नेरौ कछू न बसाय। बिरह बिथा कासों कहौं सजनी बिकल भई अब घर न सुहाय। रामप्रिया अवधेश ललन बिन दिन जामिनमोह जुगसे बिहाय ॥३११॥

रसीले नैंना राघौजीके। कंज खंज मृगमीन न पटतर चंचलता अधकीले। श्यामसिंगार सलौनैं पियके शोभा सागर-सीले। रामप्रिया यह प्रानप्रीतम के मोहन मंत्र बसीले ॥३१२॥

रगीले नैंना तोरे सलौनैं। जित चितवत तित बसकर राखत प्रगट कपट पटटौनैं। किहि पटतरिये बुधि बल थाकी बानी रहत लख मौनैं। चंचल चपल मतवारे प्रीतम प्रान ठगौनैं। रामप्रिया सुनिये मनभावन मोहिय प्रेम पगौनैं ॥३१३॥

मोरी नवलकिशोरी प्यारी लागै रँगोली तेरी अखियाँ। मृगनयनी अंजत जुत कारी खंजन मीन चपल तज लखियाँ। नयन कटाच लगत मनमथसर मोमन छोभ करत नित घतियाँ। रामप्रिया सुन्दर रसनागर सुदिन रहत देखत मत थकियाँ ॥३१४॥

सुरत नहिं बिसरै तोरी पिया रे। श्री अवधेश ललन रघु-नंदन मोअखियनके तारे। बिन देखै दिल दारयारमुह तलफत प्राण बिचारे। अलीवृपभानकुँवर मनभावन लगजोगले हमारे ॥ ३१५ ॥

श्यामलियारे तोबिन रहौ न जाय। जब से लखी यह माधुरी मूरति घरी पल जुग सम जाय। बिन दरशनमोह कल न परत है तलफतही निसि जाय। रामप्रियाको वेग मिलौ पिया तन की तपन बुझाय ॥३१६॥

ठुमरी

जल भरनै मई पिया मगरोकी गुरजन लाज सखी लोपी। हौं सरजू जल भरन निकसी जब औचक छैल गगरि पटकी। रस सागर नागर रघुनन्दन सनमुख आय चुनरि झटकी। रामप्रिया कछु कहि न सकी तब बाछव छैल द्रगन अटकी ॥३१७॥

पद

सुआनद मंगल गाइयेरी। भूप भवन मिल जाइयेरी। महरानी सनमान सबनकौं आदरभाव सबाई येरी। बाजें बाजन मधुर सरनसे नाचें हो भाव दिखाइयेरी। रामप्रिया सिया जन्म महोत्सवपूरनपुत्रन पाइयेरी ॥३१८॥

श्रवनसुयशसुन आइ द्वार। तुम तौ अधम उधारन नागर हमरी दार कस करतवार। रामप्रिया बलहारि नामकी अवकी भवसागर से करहु पार ॥३१९॥

नित धाम हमारो नित लाल ललौ। नितहिं बिलास रास नित विलसत नितनव देखत प्रेमथली। नित्त प्रकास प्रियाप्रीतम कौ नित्त सकल सुखसाज मली। नित्त सिंगार परस्पर क्रीड़ा नित्त मगन मन मकल अली। नित्त प्रमोद विपन द्रुमसाखा नितनव फूली कुसम कली। नित्त अवध सरजू नित पावन दरस

परस अघ भूर दली। नित्त नवल प्यारी सुख आनद नितनव नैह सनेह फली। नितनव मोद प्रमोद बढ़ावत रामप्रिया लख भाग-फली ॥३२०॥

अपनै प्रीतम कौ रिझाउँरी मैं तौ मधुरी तान सुनाउँरी ॥ पियारीझैं गुरुजन चाह खीजैं जग कुल कान्ह बहाऊँरी। मिहिर करहि सियाबर प्यारे की बाहीमें लाज मनाउंरी। रामप्रिया लख जुगल माधुरी हिय की तपन बुझाउंरी ॥ ३२१ ॥

फाग। खेलतफाग उमंगभरे नवनेह छके रस चोलनमें। अलकैंछूट कपोलन आई चोली कस टूटे खेलन में। केसर रंग परौअंगैपै सियारूप भरौ पिया नैंननमें। स्याम प्रीतरँग एकभयौ मिल हरे हरे कहैं सखी केलन में। रामप्रिया सहचरीजीवन धन विलास भरौ मो नैंनन में ॥ ३२२ ॥

पद ॥ छैलारे अटक रही तुमसैं उरझ रही छबिसैं। अपनाबहु चाहे बिसराबहु दिलसैं लगी पगी तन मनसैं। सरनागत आबत पालतहौ बिरदावली फली अधमनसै। रामप्रिया बहुतक अपनाये कहा द्रगन मिसकर पियाहमसैं ॥३२३॥

कब हम लैहैं द्रगनके लाभरी। कनक निकुंज किशोर शोरी विहरत सुखलख पैहैं। अरस परस अंसन भुजदीनै यह छबि हृदय भरीहै। मृदु मुसक्यात बतात रसिक निधि नैंनसैंन चित दैहैं। रामप्रिया प्रीतमसे रसबतियाँ कब कैहैं ॥३२४॥

लालमिलनको सदा द्रग ललकैं। बिनदेखैं छिन भरनहिं मानत निरखत परनदेत न पलकें। चंद्रवदन लख प्रानप्रीतमकौ

जिय चाहत मिलिये भुजभरकै। चंद चकोर लखत ज्यौं निसि-दिन बिछुरन बिरह बिथा दिल दलकै। बिरह बिथा अब कासैं कहिये सहि न जाय मनमथ की कसकैं। रामप्रिया सिया प्रान प्रीतम सैं लागी लगन परी उर चसकैं ॥३२५॥

मतबारीनजरिया कौन सहै। जबसैं बसी उर स्यामरीसूरत लोक लाज कहौ कौन कहै। नवल किशोरप्रीतम बिन देखैं प्रेम फसी नहिं चैन लहै। रामप्रिया सांची सुन सजनी अधर सुधा रस को न चहै ॥३२६॥

मन मोहनी सुरतिया मन अटकी। किहिं पटतर दैउं मत भटकी। हौंसरजू जल भरन जातती बइंआं पकर गागर पकटी। द्रगमटकाय रसीली चितवन चोलीफार चूनर झटकी। रामप्रिया छबि लखि मतिबारी भुजन लसत पियरी पटकी ॥२२५॥

रसिया

रसिया होरी में मोसौंखेलौ न छल को खेल। आय अचातक घूँघट खोलत बोलत रसभरे बैंन। अबकी बार पकर जो पाऊँ कर हौ मनकौ मेल। रामप्रिया कनकभवनमें तुमै दिखावहुँ फैल ॥३२८॥

होरी

रस चाखौरेछैल रँग होरीकौ। जाओ कहाँ अब भाज रसीले दाव परौ आज गोरीकौ। कंजनैन अंजन सौं आजौं भाल विभूषितबैंदीकौ। सिरसारी चोली पग नूपुर कर पहराऊँ चूरीकौ। श्रीजनकलली जू की अलीसबै जुर कूपपुजाओं या भोरीकौ।

चलौ लिवाइ सियां ढिग इनकौं चरन सहावहु प्यारीकौ। हारे कहौ जान जवपावौ फिर मगकरवरजोरी कौ। रामप्रिया तिया विहँस कहीसव जुग जीवै छैल छबीलीकौ ॥३२९॥

पद

वनी छवि वाँकी आज रगीले। वरनौंकहा अनूप रूपकौं देखत बुधवलथाकी। रोमरोम सुखदैन माधुरी अद्भुत सिया पिया झाँकी। रामप्रिया कह काकी दीजे इहि पटतर उपमाकौ ॥३३०॥

अक्षयबट पूजन काज चलौरी। सुख सौभाग बड़ावन यह तिथि अति उतसाह भरौरी। नवसत साज करौ सहचर गन मंगल गानकरौरी। कुल विधि रीति प्रतीति सौं पूजन साज सजौरी। रामप्रियासिया सहित अलिनगन मनसा सफल फरौरी ॥३३१॥

फूलनकी सारीसोहै गोरे गोरे गात। फूलनको बंदनी फूलन की चंदनी फूलन तांटक पैरे फूलन के पात। फूलनके सीसफूल चोटी मुखकंव मूल फूलन के बाजूबंदशोभा सरसात। फूलनकी चोली सोहै फूलन के हारगलैं फूलन की चंमकली मन अरुझात। फूलनके वंगला फूलनके परदा फूलन परजंक पौढ़े मदन लजात। देखी नभ चांदनी सिया मन भावनी रामप्रिया सोभा लखहीय न अघात ॥३३२॥

लगनमतवारी काहू न डरावै। लोक लाज कुल कान बडाई जात पांत नहिं भावै। जासे लगी भरी दिल सोई और न कछू

सुहावै । नेही मरिहम होईसो मन नैह रघुवर सरसावै । रोवै हसै गाय बौरौज्यों मौन रहै जकजावै । मस्त रहै दिलभर चरचामें अवर चैन नहिं पावै । रामप्रिया कहि कासौं कहिये रघुवर छैल मिलावै ॥ ३३३ ॥

मेरी आली पिया बिन नींद न आवत तलफतलफ जिय जावत । पल छिन चैनरैंन दिन नाहिन द्रग सावन झिरलावत । बिजुली चमक दमक डरपावत लख जिय मदन सतावत । रामप्रिया दरसन बिनतरसत बिरहा जोरजनावत ॥ ३३४ ॥

कुसमानी चुनरिया प्यारी जुलमकरै । गोरे अंग सोहै प्यारी के तिरछी चितवन हिय बेद करै । पवन प्रसंग कपोलन लावत घनदामिन दुत को निदरै । रामप्रिया बलजात अवध प्रिया निरख निरख उतसाह भरै ॥ ३३५ ॥

अधिक नहीं चहियतु निठुराई देखौ प्रियामिथलेश सुताकौ । जन्म लये कर फल बसुधाकौ । तनमन सुफल करौ मोरी सजनी पूरन पुन्न उदय नैना कौ । नवकिशोर छबिजोरमाधुरी देखन रुचि रहि है फिरकाकौ । रामप्रिया सिया संग जायकैं करिहौं काजमौजमनसाकौ ॥ ३३६ ॥

गुईआं मोह पकर लाल रंग बोरी । मैं नवल नार अति भोरी । आय अचानक धाय सखीरी बरवस गहि झकझोरी । चूनर भार तोर चोलीबद नैक न काहुडरौरी । कहँलगसहिये कुचाल छैल की प्रेम जाल अरझोरी । रामप्रिया प्रीतम कीबातैं कहतन हृदय भरौरी ॥ ३३७ ॥

होसियाप्यारे लगन न छूटै। लोकलाज कुलकान बड़ाई जातपात छिन टूटै। पहिर फकोरी खाकरमाई रसिक प्रीतम रस लूटै। रामप्रिया कहै प्रानबल्लभसे तुम राजो जग रूठै ॥ ३३८ ॥

नवनागर चितचोररी तेरेरूप लुभानें। तू बड़भाग सुहाग भरीहै प्रीत नीत में सानें। प्रिय नातौजान जाऊपर ताह येक करमानें। रामप्रिया प्रियारसिक सिरोमनि प्यारो हाथ बिकानें ॥ ३३९ ॥

पिया बांगिलिया में करत बिहार। चलत फुहारे चहुँ दिश सजनी गई ग्रीषम भई पावस बहार। श्रीनिमिराज किशोरीके संग हावभाव लखि रहि न समार। कबहुँ गहत कोमल करकमलन दै गल भुज मुखछबि को निहार। श्रीवृषभानु अतर लियै सनमुख दंपत चरन हिये बिच धार ॥ ३४० ॥

मेरौ बिन दरशन जिय तरसै कब छबि मिलै नजरसैं। निस दिन चैन परत नहि सजनी द्रग असुवन झर बरसै। बिन नृपलाल बिहाल भई अब बिरह बिथा बहसरसै। रामप्रिया कब मिलिये अवधपिया चरन कमल रजपरसैं ॥ ३४१ ॥

झूला। रँगबरसै रगीले झूलन में। चलौरी चलौ मिल देखन चलिये झूमत स्यामा स्याम कलोलन में। हरीहरी भूम नये द्रुमपल्लव श्रीसरजू के कूलनमें। सहचरि हरष झुलावत सब मिल गावत रागमलारनमें। रामप्रिया येहि बरमागत बसौसदा द्रग कोइन में ॥ ३४२ ॥

पद

झुमझुम आई निदिया नैनन में रस बैननमें। पिया प्यारो

सुख सेज पधारौ सैंन करौ सुख चैंनन में। मृदु मुसक्यात चले प्यारी संग बतरावत रस सैंननमें। रामप्रिया संग रसिक बिहारी केल करौ नव कुंजनमें ॥ ३४३ ॥

तेरे मिलने को छैल बहुत भटकी। कठिन निठुरता गही रावरे स्यामरी सूरत हिय अटकी। बेगदरस अवदीजे कृपानिधि ताप विरहकी तनखटकी। रामप्रिया देखै कब नैनन स्याम अंग छवि पियरे पटकी ॥ ३४४ ॥

तुमै प्रभु बाँह गहेकी लाज। आई दीन सरन आरतजन सुनौ गरीब निवाज। अधम उधारन विरद तिहारे सुन आई महराज। रामप्रिया सब भांत तुमारी तुम त्रिभुवन सिरताज ॥३४५॥

सखीमें आज लखे सीता रमन। कनक प्रजंक अंक प्रीतम के रस हेरन गलबाह धरन। उमग उमग चाहत रसक्रीडा चितवन चंद्र चकोर विचरन। हावभाव विलसत नवनागर रामप्रिया आनँद भरन ॥३४६॥

कैसे जाउं जाउं जल सरजू कौ। रोकत घाट खड़ौ पनघट कौ। भरन न देव नित रारबड़ावत पैड़ैं परौ कौशिलरनियां कौ। बिनय करत मानत नहिं प्यारौ हँस झकझोर गहत बहिआं कौं। रामप्रिया श्रीजीसे कहिये अटपट चलन अवध सैयांकौ ॥३४७॥

लागी लागीरे लगन मतटोरौ। जोकछु चूकपरीहै हमसैं सो बिसरोय कृपा कर हेरौ। प्रनतपाल हित रसिक चूड़ामनि रदावली जगत पिय तेरौ। बारबारमेरीयेही बिनती रखिये कहीं निघा नहि फेरौ। रामप्रिया मिथला कै नातै आई शरण गहौ कर मेरौ ॥३४८॥

देखौरी दोउ प्रानप्यारे कौसिलपत के राजदुलारे। स्यामल गौर किशोर मनोहर सुखसागर नागर रसभारे। गज गत चलन हसन चितचोरत त्रिभुवन सुंदरतासैन्यारे। सिरपरक्रीट खौर चंद्रन की अलक कपोल भ्रमरमदहारे। मौतिन माल पदक की शोभा भूषन बसन विचित्र समारे। बृषभांनअली यह अलौकिक जपतप जोग ज्ञान सब वारे ॥३४९॥

मनमोहनीसूरत स्यामरी को नहोय लखवावरी। कुल मरजाद त्याग हैं इनपै कहमिथलाको नागरी। तैसहि नवलकिशोर राबरौ तैसहिं सिया छबिआगरी। रामप्रियासंजोग रचौ बिधि लैहै द्रगन कौ लाभरी ॥३५०॥

बनै शिवलोचन तीरथराज। अनुपम प्रेम अखैवट भूषित नितसब भुव सिरताज। छबि सित अरुन स्याम सुंदरबर सरस समागम साज। श्रीबृषभानकुँवर प्रीतम मन मज्जन सुक्रत सनाज ॥३५१॥

देखौरी छबि राजकुँवर की। क्रीटमुकट मकराकृत कुंडल भालतिलक भ्रकुटी धन सर की। मृदु मुसक्यान कमल दल लोचन चाल गयंद गरूर चलाकी। सुंदर सुभग सिंगार मनोहर को बरनैं छबि कामति कबिकी। रामप्रिया बाई इनऊपर किहि उपमादैउं लख मत भटकी ॥३५२॥

होसियावर की लगन हिय खटकी। जबसैं लखी स्यामरी सूरत द्रगन बसी छबि पियरे पटकी। मोजिय भोरी कछुय न जानी चातुरता बानागरनटकी। मृदु मुसक्याय भुलाय लयौ मन

पिया बनमाल बेंसर मोरी अटकी। रामप्रिया नव छैल हटीलौ आन गही बरबस सिरपटुकी ॥३५३॥

दोहा जुगल माधुरी लखतनित, धन सखि तुमरौ भाग।
सावन मनभावन निकट, रहत भरी अनुराग ॥३५४॥

होरी। केसर रंग चुनरी बोरी सैयां। होंसरजू जल भरन जातती आन गही मोरी बहियां। अनुज सखा सब टेरबुलाये रोकौ न छैल डगरिया। एसौ हाल कियौ नवनागर पिया कैसे जाउँ नगरिया। बृषभानकुँवर कैसहुँ नहिं मानत बिनय करौं परौं पैयां ॥३५५॥

बसंत के पद

पिय प्यारे बिन मोरे जिय कल न परै। श्रीअवधेस बिना सुन सजनी बिरह अगिन दिन रैन जरै। जबसैं लखी सखी वह मूरत तबतै छिन पल नाहि टरै। नहिं सुहात धन धाम ग्राम अव असन बसन सब त्याग धरे। श्रीरामप्रिया को बेगमिलावौ पिया देदरसन सब दुख्य हरै ॥३५६॥

तुम कहुरे भवरा पियासों जाय। प्रीतम बिन मोह अव कछू न सुहाय। एक तौ पिया बिन रहौ न जाय। दूजे वसंत ऋतुराज आय। तीजे पपीहा पिया पिया रटत धाय। सुन सुनकैं मोहि बिरहा सताय। अवध छैल राघुराजलाल। दैदरशन कीजे मो निहाल। श्रीरामप्रिया को मिलहु आय। लीजे भुज भरके गर-लगाय ॥३५७॥

फाग। सिया राम हृदय मन भजलैरे। सुनत्रयताप नसालैरे। श्रीरघुनाथ कौ नामकल्पतरु भवसागर को तरलैरे। जो चहवास

महल सिया पिया कौ जो कोऊ प्रीत लगा लैरे। रामप्रिया चाहै सख अपनौ जुगल चरन हिय धरलैरे ॥३५८॥

प्यारी तेरे नैनन में रस वरसै। लख प्रीतम सुखसरसै। खंजन मीन कंज छवि लाजत द्रगकाजर सैं भरसै। जवकब ओट करतघुंघट पियाविनदेखैंतरसै। रामप्रिया सहचरी यह सुखको लख आनंद उर हरसै ॥३५९॥

ठुमरी ॥ दरस विन अखियां तरसहींरे। पिया परदेस उमर मेरी वारी विरहा दुखभारी सहौंकैसेरे। बृषभानकुँवर पिया आप नहीं आए सँदेश न पठाए कठिन पावस सरसायौरे ।३६०।

विहरत फुलवारी पिया मेरे मनभाए। क्रीट मुकट सीस सोहै कुंडल अनमोले अलक घुघरवारी कपोलन परीए। भौंह चाप बंकवनी नयनारतनारे मंदहसन प्यारी मेरे मनमें भरीए। अली वचन सुनत सिया नैंना अकुलानैं विहस सखी संग चली दरसन फलपाए। देख कैं निहाल भई ऋषी वा कहिये विचार वृषभानकुँवर लख सरूप तन मन धन वारे ॥३६१॥

आरती

रंगमहल द्वार सखी आरती समारैं। जुगल नाम जुगल रूप मुख जस उच्चारैं। सेजसकलसाज लिये सैंन भवन राजै। दंपत मुख चंद्र निरख कोट काम लाजैं। कोऊ चौंर छत्र हाथ पंखा सरसावैं। पानदान अतर लै सुअंग कौं लगावैं। सुभ गुलाव जल सैं चहुँओरन छिरकावैं। लै सुतार वीना कोऊ मधुर राग गावैं। रँग उमंग आनँद भर वचन कौ सुनावैं। श्रीरामप्रिया स्वामिनके चरन कमल ध्यावैं ॥३६२॥

आरती करैं अली सियावल्लभकी । गलमेंभुज ग्रीवा में ग्रीवा अजब भैंट भई घन दामिनिकी । कबहुँ मेघदामनीमें लपटत कबहुँ दामनी घनमें दमकी । वार वार पिया वदन विलोकत तपन बुझावत विरहा अगिन की । रामप्रियानीरांजन कर पुनि वलिहारी दोऊ रसिक प्रीतम को ॥३६३॥

आरती कीजे सिया रघुवरकी । क्रीट मुकुट मकराकृतकुंडल चितवन ललित भावती सुन्दर श्रीरघुवंश उदय दिनकरकी । अंग अंग सुखदैनमाधुरी को वरनैं छवि रूप माधुरी । मन भावन नागर प्रीतमको नेतनेत कह बेद जोगावत शंकर ताह हृदय में ध्यावत रामप्रिया सरबस धन मनकी ॥३६४॥

आरत करहैं सखि आनदमन करभोजनबैठे परजंकपर शोभा लखत लाजत दामिनि घन । नंनन नींद अरुनता छाई कमल दलन संपुटत भवँर जन । रामप्रियानीरांजन करकैं सिया वल्लभ पर वारह धनतन ॥३६५॥

इति श्रीवृषभानविनोदे श्रीरानी श्रीमहारानी श्रीसवाई महेंन्द्रमहारानी श्रीमतीदेवी "वृषभानकुँवरि" जू खिरियावार वडोसरकार टोकमगढ़ कृत

संपूर्णम्

शुभमस्तु

प्रथमबार ५०० प्रति — चैत्रशुक्ल ९ रविवार १९७१
(ता० ५ अप्रैल सन् १९१४ ई०)

द्वितीयबार १००० प्रति — भाद्रपदशुक्ल ५ शनिवार २०१७
(ता० २७ अगस्त सन् १९६० ई०)

सरला प्रेस, वाराणसी